सत्यमेव जयते

# रोजगार हमी योजना समिती

## (२०१४-२०१५)

(बारावी महाराष्ट्र विधानसभा)

## अठ्ठाविसावा अहवाल

**(अमरावती जिल्ह्याच्या संबंधात)**

**(अहवाल दिनांक : जून, २०१४ रोजी विधानसभेस/विधानपरिषदेस सादर केला)**

*

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय**

विधानभवन, मुंबई

२०१४

# रोजगार हमी योजना समिती

## (२०१४-२०१५)

(बारावी महाराष्ट्र विधानसभा)

## अठ्ठाविसावा अहवाल

**(अमरावती जिल्ह्याच्या संबंधात)**

**(अहवाल दिनांक : जून, २०१४ रोजी विधानसभेस/विधानपरिषदेस सादर केला)**

## महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय
## रोजगार हमी योजना समिती
## (सन २०१३-२०१४)

**समिती प्रमुख**

(१) ॲड. सदाशिवराव पाटील, वि.स.स.

**सदस्य**

(२) श्री अनिल बावनकर, वि.स.स.
(३) श्री वामनराव कासावार, वि.स.स.
(४) श्री ओमप्रकाश पोकर्णा, वि.स.स.
(५) श्री भाऊराव पाटील, वि.स.स.
(६) श्री दिलिपकुमार सानंदा, वि.स.स.
(७) श्री वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.
(८) श्री शिवेंद्रसिंह भोसले, वि.स.स.
(९) श्री राहुल मोटे, वि.स.स.
(१०) श्री दिलिप वाघ, वि.स.स.
(११) श्री दीपक चव्हाण, वि.स.स.
(१२) प्रा. लक्ष्मण ढोबळे, वि.स.स.
(१३) डॉ. सुधाकर भालेराव, वि.स.स.
(१४) श्री हरिष पिंपळे, वि.स.स
(१५) श्री कृष्णा खोपडे, वि.स.स.
(१६) श्री विजयराज शिंदे, वि.स.स.
(१७) श्री दादाजी भुसे, वि.स.स.
(१८) कॅप्टन अभिजीत अडसूळ, वि.स.स.
(१९) श्री नितीन भोसले, वि.स.स.
(२०) श्री धैर्यशील पाटील, वि.स.स.
(२१) श्री सुभाष चव्हाण, वि.प.स.
(२२) श्री वसंतराव खोटरे, वि.प.स.
(२३) श्री रमेश शेंडगे, वि.प.स.
(२४) श्री अनिल तटकरे, वि.प.स.
(२५) श्री सुमंत गायकवाड, वि.प.स.
(२६) प्रा. अतुल देशकर, वि.स.स., निमंत्रित
(२७) श्री जयंत पाटील, वि.प.स., निमंत्रित

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

(१) डॉ. अनंत कळसे, प्रधान सचिव,
(२) श्री म.मु. काज, उप सचिव,
(३) श्री जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

## रोजगार हमी योजना समिति
## (सन २०१२-२०१३)

**समिती प्रमुख**

(१) ॲड. सदाशिवराव हणमंतराव पाटील, वि.स.स.

**सदस्य**

(२) श्री अनिल बावनकर, वि.स.स.
(३) श्री वामनराव कासावार, वि.स.स.
(४) श्री ओमप्रकाश पोकर्णा, वि.स.स.
(५) श्री राहुल बोंद्रे, वि.स.स.
(६) श्री दिलिपकुमार सानंदा, वि.स.स.
(७) श्री वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.
(८) श्री शिवेंद्रसिंह भोसले, वि.स.स.
(९) श्री राहुल मोटे, वि.स.स.
(१०) श्री दिलिप वाघ, वि.स.स.
(११) श्री दीपक चव्हाण, वि.स.स.
(१२) ***श्री ए. टी. पवार, वि.स.स.
(१३) *डॉ. खुशाल बोपचे, वि.स.स.
(१४) *श्री हरिष पिंपळे, वि.स.स
(१५) *श्री संजय भेगडे, वि.स.स.
(१६) *प्रा. अतुल देशकर, वि.स.स.
(१७) ॲड. आशिष जयस्वाल, वि.स.स.
(१८) कॅ. अभिजीत अडसूळ, वि.स.स.
(१९) श्री विजयराज हरिभाऊ शिंदे, वि.स.स.
(२०) श्री प्रविण दरेकर, वि.स.स.
(२१) श्री सुभाष चव्हाण, वि.प.स.
(२२) श्री वसंतराव खोटरे, वि.प.स.
(२३) श्री रमेश शेंडगे, वि.प.स.
(२४) *श्री अनिल तटकरे, वि.प.स.
(२५) श्री भगवान साळुंखे, वि.प.स.
(२६) **डॉ. दिपक सावंत, वि.प.स., **निमंत्रित**

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

(१) डॉ. अनंत कळसे, प्रधान सचिव
(२) श्री यू. के. चव्हाण, अतिरिक्त सचिव,
(३) श्री जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

---

**टीप.—** * डॉ. खुशाल बोपचे, सर्वश्री हरिष पिंपळे, संजय भेगडे व प्रा.अतुल देशकर, वि.स.स. यांची दिनांक २५ जुलै २०१२ रोजी मा. अध्यक्षांनी सदस्य म्हणून नामनियुक्ती केली.

** डॉ. दिपक सावंत, वि.प.स. यांची दिनांक २७ ऑगस्ट २०१२ रोजी मा. सभापतीनी निमंत्रित सदस्य म्हणून फेर नामनियुक्ती केली.

*** श्री लक्ष्मण जगताप, वि.स.स. याच्या ऐवजी श्री ए. टी. पवार, वि.स.स. यांची दिनांक ७ जानेवारी २०१३ रोजी मा. अध्यक्षांनी सदस्य म्हणून नामनियुक्ती केली.

# अनुक्रमणिका



| अ. क्र. (१) | विषय (२) | पृष्ठ क्रमांक (३) |
|---|---|---|
| | **प्रस्तावना :** | |
| १. | कामाचे वार्षिक नियोजन | १ |
| २. | निधीचा पुरवठा व खर्च | ८ |
| ३. | मजुरांच्या सोयी-सवलतींवर करण्यात आलेला खर्च | १० |
| ४. | मजुरांची नोंदणी | ११ |
| ५. | अपूर्ण कामे | १२ |
| ६. | सामाजिक वनीकरण | १८ |
| ७. | धडक सिंचन विहिर कार्यक्रम | १९ |
| ८. | गैरव्यवहाराची प्रकरणे | २१ |
| | **परिशिष्ट :** | |
| | एक - अपूर्ण कामे | २३ |
| | दोन - गैरव्यवहाराची प्रकरणे | ४३ |
| | तीन - बैठकीचे संक्षिप्त कार्यवृत्त | ५१ |

## प्रस्तावना

मी, रोजगार हमी योजना "समितीचा प्रमुख" या नात्याने समितीच्या अनुमतीने समितीचा अठ्ठाविसावा अहवाल सादर करीत आहे.

मा. अध्यक्ष, विधानसभा व मा. सभापती, विधानपरिषद, यांनी अनुक्रमे दिनांक २४ सप्टेंबर २०१३ व २२ ऑक्टोबर २०१३ रोजी नियुक्त केलेल्या सदस्यांची सन २०१३-२०१४ या वर्षासाठी समिती गठित केली. सन २०१२-१३ या वर्षासाठी गठीत करण्यात आलेल्या समितीने दिनांक १० व ११ जून २०१३ रोजी अमरावती येथे जिल्हा बैठक घेतली होती. या बैठकीमध्ये समितीने पाठविलेली प्रश्नावली व जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीने रोहयोच्या कामात आलेल्या त्रुटी तसेच रोहयो अंतर्गत कामे करणाऱ्या मजुरांना आलेल्या अडचणी व ही योजना राबवितांना कार्यान्वयीन यंत्रणांना आलेल्या उणीवा व अडचणी याबाबत लोकप्रतिनिधी, जिल्हाधिकारी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हापरिषद व जिल्ह्यातील रोहयोची कामे करणाऱ्या कार्यान्वयीन यंत्रणेचे अधिकारी यांच्याशी चर्चा केली.

जिल्हा बैठकींमध्ये समितीसमोर आलेली प्रकरणे व कार्यान्वयीन यंत्रणेच्या अधिकाऱ्यांबरोबर झालेल्या चर्चेच्या अनुषंगाने तसेच त्यांनी कामांच्या पूर्ततेसंबंधी दिलेल्या आश्वासनासंदर्भात प्रश्नावली तयार करून ती नियोजन विभागाकडे (रोहयो) पाठवून शासनाने त्याबाबत केलेल्या पूर्ततेबाबतची माहिती त्यांचेकडून समितीने मागविली. समितीला प्राप्त झालेल्या माहितीच्या अनुषंगाने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी प्रधान सचिव, नियोजन विभाग (रोहयो) यांची साक्ष घेण्यात आली.

उपरोक्त अहवाल जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला आढळून आलेल्या त्रुटी तसेच विभागीय सचिवांच्या साक्षीच्या वेळी प्राप्त झालेल्या माहितीच्या आधारे तयार करण्यात आलेला आहे.

समितीच्या कामकाजाच्या वेळी करण्यात आलेल्या सहकार्याबद्दल, समितीचे सर्व सदस्य, जिल्ह्यातील लोक प्रतिनिधी, अमरावती जिल्हा परिषदेचे अध्यक्ष, पंचायत समित्यांचे सभापती, जिल्हाधिकारी, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती व योजनेच्या कार्यान्वयीन यंत्रणांचे सर्व अधिकारी यांची समिती आभारी आहे.

त्याचप्रमाणे प्रधान सचिव, नियोजन विभाग (रोहयो) यांनी समितीच्या निमंत्रणावरून समितीच्या बैठकीस उपस्थित राहून समितीला जे सहकार्य केले त्याबद्दल समिती त्यांचीही आभारी आहे.

समितीने सदर अहवाल दिनांक २१ मे २०१४ रोजी विचारात घेतला व संमत केला.

विधान भवन
मुंबई,
दिनांक २१ मे २०१४.

**ॲड. सदाशिवराव पाटील**
समिती प्रमुख,
रोजगार हमी योजना समिती.

# रोजगार हमी योजना समितीचा अहवाल

**(१) कामाचे वार्षिक नियोजन :**

रोजगार हमी योजना समितीच्या दिनांक १० व ११ जून २०१३ रोजी अमरावती येथे जिल्हा बैठका घेण्यात आल्या. बैठकींच्या वेळी समितीला 'कामाचे वार्षिक नियोजन' या संबंधात लेखी स्वरूपात माहिती पुरविण्यात आली. त्यानुसार सन २००७-०८ ते २०१२-१३ या वर्षातील वार्षिक नियोजन आराखड्याचे स्वरूप खालील प्रमाणे नमूद केले आहे.

| | वर्ष (१) | कालावधी (२) | सह जिल्हा कार्यक्रम समन्वयक यांनी मान्य केलेले वार्षिक नियोजन आराखडे जिल्हा कार्यक्रम समन्वयक यांना सादर केल्याचा दिनांक (३) | ग्रांमपचायत/ यंत्रणेच्या नियोजन आराखडयास जिल्हा परिषदेची मान्यता मिळाल्याचा दिनांक (४) | मग्रांरोहयो आयुक्तांनी मान्यता दिल्याचा दिनांक व विलंब झाला असल्यास त्याची कारणे काय (५) |
|---|---|---|---|---|---|
| (अ) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजनाच्या मार्गदर्शक सूचना २००६ परिच्छेद ६ नुसार कामाच्या नियोजनेनाचे १ एप्रिल ते ३१ मार्च या आर्थिक वर्षानुसार जिल्ह्याचे वार्षिक आराखडे विहीत मुदतीत तयार करण्यात आले आहेत काय? नसल्यास त्याची कारणे काय आहेत? | २००७-०८ | २००८-०९ | पत्र क्र.२१८५ दि.२६/७/२००७ | ठराव क्र. २२, दि. ०८/०८/२००७ | . . . |
| | २००८-०९ | २००९-१० | | ठराव क्र.३४ दि. १८/०७/२००८ | . . . |
| | २००९-१० | २०१०-११ | | ठराव क्र. ११, दि. १३/०१/२००९ | . . . |
| | २०१०-११ | २०११-१२ | | ठराव क्र.१९, दि. १३/११/२००९ | . . . |
| | २०११-१२ | २०१२-१३ | | ठराव क्र. ०६ दि. १७/०२/२०११ | . . . |
| | २०१२-१३ | २०१३-१४ | | ठराव क्र. ०७, दि. ०३/१२/२०१२ | . . . |

**(ब)** वरील कालावधीतील नियोजनाचे वार्षिक आराखडे तयार करण्याचे काम माहे सप्टेंबर अखेरपर्यंत पूर्ण करण्यास जिल्हाधिकाऱ्यांना काही अडचणी आल्या असल्यास थोडक्यात स्पष्टीकरण द्यावे.

वरील कालावधीतील नियोजनाचे वार्षिक आराखडे तयार करण्याचे काम सप्टेंबर अखेरपर्यंत पूर्ण करण्यास जिल्हाधिकाऱ्यांना काही अडचणी आलेल्या नाही.

**(क)** वरील कालावाधीत नियोजनाचे वार्षिक आराखडे पूर्ण असल्यास जिल्हा आराखडयाचे स्वरूप नमूद करावे.

सन २००८-२००९ ते २०१२-२०१३ च्या वार्षिक नियोजन आराखडयाचे स्वरूप खालीलप्रमाणे आहे.

| अ.क्र. | कामाचे प्रकार | एकूण कामे (संख्या) | अंदाजीत खर्च (लाखात) | अपेक्षित मनुष्य दिवस निर्मिती (लाखात) | एकूण खर्चाची टक्केवारी |
|---|---|---|---|---|---|
| | **सन २००८-०९** | | | | |
| (१) | पाटबंधारे | २ | १४.९९ | ०.११ | . . |
| (२) | वनीकरण | १५८५ | ३८.२४ | ०.५४ | . . |
| (३) | रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेत रस्ते | ९ | ५९.४३ | ०.१० | . . |
| (४) | रखडलेल्या जमीन रोहयो मधून दुरुस्ती | ३३०१.८५ हे | ६५६.३३ | . . | . . |
| | **सन २००९-१०** | | | | |
| (१) | वनीकरण | १०१४ | १५.२ | ०.२२ | . . |
| (२) | रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेत रस्ते | १६ | १२६.०६ | ०.०६ | . . |
| (३) | तुती लागवड (हे) | ३३ | १८.५९ | ०.०००७९ | . . |
| (४) | रखडलेल्या जमीन रोहयो मधून दुरुस्ती | २८४१.१२ | २९३.७७ | . . | . . |
| (५) | नैसर्गिक आपत्ती मध्ये खचलेल्या विहिरीची रोहयोमधून दुरुस्ती | १९७९ | २७८.६३ | . . | . . |
| | **एकूण** | | | | |
| | **सन २०१०-११** | | | | |
| (१) | पाटबंधारे | १ | १.२८ | . . | . . |
| (२) | वनीकरण | १६९७ | १७.०७ | ०.३७ | . . |
| (३) | रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेत रस्ते | २१ | १३०.५५ | ०.००७ | . . |
| (४) | तुती लागवड (हे) | ३१ | ७.४० | ०.०००७५ | . . |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | **सन २०११-१२** | | | |
| (१) | वनीकरण | ९७० | १.५९ | .. | .. |
| (२) | रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेत रस्ते | ९ | १०.९८ | .. | .. |
| (३) | तुती लागवड (हे) | ३१ | ७.४० | .. | .. |
| | | **सन २०१२-१३** | | | |
| (१) | पाटबंधारे | १ | १.४५ | .. | .. |
| (२) | रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेतरस्ते | ३ | ३२.७६ | .. | .. |

| **(ड)** व्यक्तिगत लाभदायक योजनांची चालू वित्तीय वर्षाची माहिती | कामाचे प्रकार | एकूण कामे (संख्या) | अंदाजित खर्च (लाखात) | अपेक्षित मनुष्य दिवस निर्मिती (लाखात) | एकूण खर्चाची टक्केवारी |
|---|---|---|---|---|---|
| | सन २००८-०९ | | | | |
| | जवाहर विहीरी संख्या | स्वतंत्र तक्ता टिपणीस जोडला आहे. | - | - | |
| | फलोत्पादन (हे) | १०३०८ | १७६३.१६ | १०.४६ | ३६.७८ |
| | सन २००९-१० | | | | |
| | जवाहर विहीरी संख्या | स्वतंत्र तक्ता टिपणीस जोडला आहे. | - | - | |
| | फलोत्पादन (हे) | ७२९९ | १९४०.१० | १०.६३ | ५२.७९ |
| | सन २०१०-११ | | | | |
| | जवाहर विहीरी संख्या | स्वतंत्र तक्ता टिपणीस जोडला आहे. | - | - | |
| | फलोत्पादन (हे) | २८७० | ९४८.८८ | ५.५५ | ७० |
| | सन २०११-१२ | | | | |
| | जवाहर विहीरी संख्या | स्वतंत्र तक्ता टिपणीस जोडला आहे. | - | - | |
| | फलोत्पादन (हे) | १८०१.४० | ६१३.०३ | ४.९७ | १०७.३३ |
| | सन २०१२-१३ | | | | |
| | जवाहर विहीरी संख्या | स्वतंत्र तक्ता टिपणीस जोडला आहे. | - | - | |
| | फलोत्पादन (हे) | ३१३०.५ | ५९०.७२ | ७.५९ | २८.९७ |

| (इ) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना अंतर्गत ५०% कामे ग्राम पंचामतीमार्फत करावयाची असल्याने पंचायत समिती निहाय मंजूर | पंचायत समितीचे नाव | कामाचा प्रकार | एकूण कामे (संख्या) | अंदाजित खर्च (लाखात) | अपेक्षित मनुष्य दिवस निर्मिती (लाखात) | एकूण खर्चाची टक्केवारी |
|---|---|---|---|---|---|---|

उपरोक्त माहितीच्या अनुषंगाने बैठकीच्या वेळी समितीने अशी विचारणा केली की, सन २००८ ते २०१३ या वर्षाचे वार्षिक नियोजनाचे आराखडे कोणकोणत्या तारखांना सादर करण्यात आले. नियोजनाच्या आराखड्याच्या एकूण टक्केवारीची माहिती का देण्यात आलेली नाही. उद्दिष्ट, झालेले काम आणि केलेला खर्च यांची टक्केवारी देणे आवश्यक आहे. यावर जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, सन २००७-०८ चे वार्षिक नियोजन आराखडे दिनांक २६ जुलै २००७ रोजी, सन २००८-०९ चे दिनांक १० जुलै २००८ रोजी, सन २००९-१० चे दिनांक २ जानेवारी २००९, सन २०१०-११ चे दिनांक ३ ऑक्टोबर २०१० रोजी, सन २०११-१२ चे दिनांक ९ ऑक्टोबर २०११, सन २०१२-१३ चे दिनांक २५ सप्टेंबर २०१२ रोजी सादर करण्यात आले आहेत. नियोजनाच्या आराखड्याची टक्केवारी काढलेली नाही. त्या- त्या वर्षात खर्च झालेला आहे. सन २००८-०९ या वर्षात पाटबंधारे विभागाचा १४.९९ लाख रु. खर्च झाला आहे.

समितीने पुढे विचारणा केली की, सन २००६ पासून अमरावती मध्ये एमआरईजीएस चे काम सुरू झाले होते. त्यामुळे सन २००८-०९ मध्ये एमआरईजीएसच्या माध्यमातून पाटबंधारे विभागाचे उद्दिष्ट किती होते? या ठिकाणी खर्चाची टक्केवारी देणे आवश्यक असतांना सुध्दा खर्चाची टक्केवारी दिलेली नाही. जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, त्यावेळी स्थानिक स्तरावरची २ कामे सुरू होती.

कामाचे आराखडे तयार करताना पुढील वर्षाचे नियोजन करावयाचे असते. परंतु, तशा प्रकारे नियोजन केलेले नाही. जलसंधारणासाठी ५५ टक्के, पाटबंधारेसाठी ५ टक्के, वनीकरणासाठी १० टक्के, रस्ते आणि इतर कामांसाठी ३० टक्के अशा प्रकारे पुढील वर्षाचे नियोजन केले जात असते. परंतु, अशा प्रकारे नियोजन केलेले दिसत नाही असे समितीने स्पष्ट केले.

समितीने विचारणा केली की, सन २००८-०९ मध्ये ५ टक्क्यांप्रमाणे पाटबंधारे विभागाचे उद्दिष्ट किती होते. रोहयो आणि एमआरईजीएसच्या माध्यमातून कोणत्याही प्रकारचे नियोजन केलेले नाही तसेच कामांचे उद्दिष्ट सुद्धा दिलेले नाही. पाटबंधारे विभागाची कोणकोणती कामे घेतलेली आहे याची माहिती आढावा बैठकीमध्ये विचारली होती त्यावेळी अंदाजपत्रकासाठी पैसे नाहीत अशी माहिती देण्यात आली होती. त्यामुळे संबंधित अधिकाऱ्यांवर कारवाई करण्याची आवश्यकता आहे. कामाचे नियोजन नसेल, कामाचे उद्दिष्ट नसेल तर कामांची अंमलबजावणी कशी होणार? जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, सन २००८-०९ मध्ये रोहयोच्या माध्यमातून नियोजन करण्यात आले नाही. सन २००८-०९ मध्ये एमआरईजीएसच्या माध्यमातून ५ टक्क्यांचे नियोजन करण्यात आले होते. अपूर्ण काम करण्याचे उद्दिष्ट होते, यामध्ये २ कामे पूर्ण करण्यात आली असून त्यासाठी १४.९९ लाख रुपये खर्च झालेला असून या संदर्भातील सविस्तर माहिती एमआरईजीएसच्या माहिती पुस्तकात देण्यात आली आहे. वनीकरणाची १५८५ कामे करण्यात आली असून त्यासाठी ३८.२४ लाख रुपये खर्च झालेला आहे. रस्ते, अंतर्गत रस्ते, शेत रस्त्यांसाठी ५९.४३ लाख रुपये खर्च झालेला आहे

समितीने विचारणा केली की, खरडलेल्या जमिनीसाठी ६५६.३३ लाख रुपये खर्च करण्यात आलेला आहे. यामध्ये किती शेतकऱ्यांच्या जमिनीची दुरुस्ती करण्यात आली. जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, ३९,४४७ शेतकऱ्यांच्या ३३.०१ हेक्टर जमिनीची दुरुस्ती करण्यात आली. समितीने पुढे विचारणा केली की, पुढील वर्षी किती पाऊस पडेल आणि किती खरडलेल्या जमिनीची दुरुस्ती करावी लागेल हे कसे काय ठरविता? पाटबंधाऱ्याच्या कामाचे अंदाजपत्रक करण्यासाठी जिल्हा परिषदेकडे पैसे नाहीत असा मुद्दा सदस्यांनी उपस्थित केला होता. मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, पाटबंधाऱ्याच्या अंदाजपत्रकासाठी पैसे नाहीत ही वस्तुस्थिती होती. परंतु, गेल्या वर्षी यासंदर्भात तरतूद करण्यात आली होती. ही तरतूद डीपीडीसीमधून केली असून यापुढे असा प्रकार होणार नाही याची काळजी घेतली जाईल.

सर्वेक्षणासाठी पैसे नाहीत असा प्रकार ३५ जिल्ह्यांमध्ये एकाही ठिकाणी पाहिलेला नाही. सर्वेक्षणासाठी डीपीडीसीमधून तरतूद करूच शकत नाही. उत्तर देताना गोंधळ करून वेळ मारून नेणे योग्य नाही. प्रश्नांची माहिती नसेल तर नंतर माहिती देतो असे सांगितले तरी चालेल परंतु समितीला चुकीची आणि दिशाभूल करणारी माहिती देणे उचित नाही. चूक झाली असेल तर चूक मान्य करावी. नेमकी वस्तुस्थिती काय आहे हे सिंचन विभागानेच लोकप्रतिनिधींना सांगावे असे समितीने स्पष्ट केले असता कार्यकारी अभियंता, पाटबंधारे विभाग यांनी सांगितले की, एमआरईजीएस अंतर्गत ६ टक्के तरतूद आहे. त्यातून मा.सदस्यांकडून सर्वेक्षणाची मागणी आल्यानंतर सर्वेक्षण करून ग्रामपंचायतीच्या आराखड्यामध्ये कामाचा समावेश झाला पाहिजे. नियोजन आराखड्याला मान्यता मिळाल्यानंतर कामाचे अंदाजपत्रक तयार करून मान्यता घ्यावी लागते.

नियोजन करीत असताना रोजगार हमी योजनेमध्ये सेल्फवर कामे ठेवली जातात. त्याकरिता प्रथम सर्व्हे केलेला असतो, आराखडा केलेला असतो. आराखडा करणारी एजन्सी ग्रामपंचायत असेल तर ते त्यांच्या फंडातून खर्च करतात. सर्वेक्षणासाठी खर्च करावयाचा निधी मूळ विभागाने द्यायचा आहे. काम सुरू करते वेळी पतमर्यादा प्राप्त होते त्यातून विभागाने खर्च करावयाचा आहे असे समितीने स्पष्ट करून पुढे विचारणा केली की, सन २००८-०९, २००९-१०, २०१०-११ मध्ये उद्दिष्ट किती होते व त्याची किती प्रमाणात पूर्तता झाली. कार्यकारी अभियंता, पाटबंधारे विभाग यांनी सांगितले की, सन २००८-०९, २००९-१० मध्ये जिल्हा परिषदेने ५४५.६९ लाखाचे नियोजन केले होते. समितीने विचारणा केली की, सन २०११-१२ मध्ये उद्दिष्ट कमी का केले? उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी सांगितले की, रोजगार हमी योजनेंतर्गत कामे कमी करण्याची आणि एमआरईजीएस मध्ये हस्तांतर करण्याचे शासनाचे धोरण आहे.

एमआरईजीएस मध्ये नियोजनाचा वेगळा आराखडा तयार केला होता का? विभागीय आयुक्तांच्या प्रतिनिधींनी माहिती द्यावी. रोजगार हमी योजनेमध्ये जी कामे सुरू होती ती कामे पूर्ण करावीत आणि एमआरईजीएस अंतर्गत कामांना न्याय द्यावा हे शासनाचे धोरण आहे असे समितीने स्पष्ट केले असता, उप महासंचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी सांगितले की, सामाजिक वनीकरण विभागांतर्गत पूर्ण अमरावती जिल्ह्यात १२०० मजूर दररोज कामावर आहेत. रस्त्यांच्या दुतर्फा वृक्ष लागवड करणे, रोपवाटिका तयार करणे ही कामे जास्तीत जास्त प्रमाणात केली जातात.

समितीने विचारणा केली की, ही माहिती म्हणजे एमआरईजीएसची झालेली कामे आहेत की नियोजन आहे? सन २००६ सालापासून रोजगार हमी योजना बंद करून एमआरईजीएस अंतर्गत मोठ्या प्रमाणात कामे घ्यावीत असे ठरलेले असताना २०११-१२ मध्ये तुम्ही एमआरईजीएस अंतर्गत नियोजन काय केले होते ? उप महासंचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी सांगितले की, कामे झालेली आहेत नियोजन नाही. ही शेतकऱ्यांच्या पडिक जमिनीवर गट लागवडीची योजना आहे. रोजगार हमी योजनेंतर्गत ही कामे करावयाची होती. रोजगार हमी योजनेवरील भार कमी करून नरेगाच्या मार्गदर्शक सूचनांनुसार १०० टक्के कामे नरेगा अंतर्गत घेण्यात आली. एजन्सीने कोणती कामे केली हे समितीला सांगत आहात. समितीने नियोजन काय केले हे विचारले आहे. समितीची बैठक संपण्यापूर्वी यासंदर्भात सविस्तर स्पष्टीकरण लेखी स्वरूपात समितीला सादर करावे असे समितीने स्पष्ट केले असता उप महासंचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी होकारार्थ उत्तर दिले.

अमरावती जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला आश्वासीत केलेल्या माहितीच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली. त्यावेळी समितीने अशी विचारणा केली की, सन २००८-०९ ते २०१२-१३ च्या वार्षिक नियोजन आराखड्यामध्ये पूर्वी चुकीने विविध कामांची टक्केवारी काढण्यात आली नव्हती ती टक्केवारी आता काढून दिलेली आहे. दिलेल्या माहितीच्या बाबतीत चर्चा न करता २०१३-१४ मध्ये काय नियोजन केलेले आहे त्या बाबतची माहिती देण्यात यावी. टक्केवारीच्या संदर्भात दिलेली माहिती आणि आता दिलेली टक्केवारीची माहिती यामध्ये काही सुधारणा झाली आहे किंवा नाही? सुरूवातीला ही टक्केवारी का काढण्यात आली नव्हती ?

जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, सन २००८-०९ मध्ये पहिल्या टप्प्यात एमआरईजीएस योजना सुरू झाली, एमआरईजीस योजनेची ईजीएस सारखी टक्केवारी काढावी अशी तरतूद नाही. तरीदेखील या योजनेसंबंधीची टक्केवारीची माहिती सादर केलेली आहे. या योजने-संबंधी कामांची टक्केवारी करावी असे आवश्यक नाही. जशी मागणी येते त्याप्रमाणे कामे करून देण्यात येतात. या योजनेच्या माध्यमातून जलसंधारणाची कामे मोठ्या प्रमाणात घेण्यात येतात. त्यामुळे एमआरईजीएसची टक्केवारी काढण्याची काही आवश्यकता नाही.

समितीने विचारणा केली की, एमआरईजीएसच्या कामांची टक्केवारी काढण्याची आवश्यकता नाही असे म्हणता आहात व उत्तरात नूमद केले आहे की, चुकीने टक्केवारी काढण्यात आलेली नाही. त्यामुळे टक्केवारीचा प्रश्न विचारण्यात आला. जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, ईजीएसमध्ये टक्केवारी काढण्याची पद्धत होती, त्यामुळे कामांच्या टक्केवारीची माहिती सादर केली. एमआरईजीएसच्या कामांची टक्केवारी काढण्याची काही आवश्यकता नाही असे ऐनवेळी लक्षात आले.

विभागीय सचिव यानी सांगितले की, मृदसंधारणाच्या कामांना प्राधान्य देण्यात यावे अशा शासनाने सूचना दिलेल्या आहेत. नरेगा योजना या जिल्ह्यात सन २००६ पासून लागू आहे. लेबर बजेट २०१३-१४ मध्ये कसे केलेले आहे असा प्रश्न विचारण्यामागचा हेतू आहे. या बाबतीत प्रत्येक ग्रामपंचायतीच्या ग्रामसभेचे ठराव पंचायत समितीकडे येतात आणि त्यानंतर ते ठराव जिल्हा परिषदेकडे पाठविले जातात आणि जिल्हा परिषदेकडून ते ठराव जिल्हाधिकारी यांच्याकडे पाठविले जातात. त्यानंतर एमआरईजीएसची कामांना मंजुरी दिली जाते. या कामांना काही विशिष्ट टक्केवारीची मर्यादा घालून दिलेली नाही. या योजनेत प्रत्यक्षात जलसंधारणाच्या कामांची ५० टक्के मागणी असते.

समितीने विचारणा केली की, तालुक्यांचा रेश्योप्रमाणे, जिल्ह्याच्या रेश्योप्रमाणे जलसंधारणाची कामे नियोजनात घेतली आहेत काय ? २०१३-१४ या वर्षात कामाचे काय नियोजन केलेले आहे ? खरडलेल्या किती जमिनींची कामे हाती घेतली आहेत ?

जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, ग्रामपंचायतीकडील मृदसंधारणाच्या कामांचे ठराव पंचायत समितीच्या माध्यमातून जिल्हा परिषदेकडे आले, जिल्हा परिषदेने त्या ठरावांना मान्यता दिल्यानंतर ते ठराव आमच्या कार्यालयाकडे आले. वेगवेगळ्या विभागांचे जवळ जवळ १५१५८ कामांचे प्रस्ताव असून त्या कामांची एकूण अंदाजित किंमत १९९.३९ कोटी रुपये एवढी आहे. या कामांमुळे मजूर क्षमता ६८ लाख ७५ हजार ९९४ पर्यंत जाईल आणि मनुष्य दिवस हा फार महत्वाचा घटक आहे. ९९ लक्ष ६३ हजार एवढे मनुष्य दिवस निर्माण होतील अशा प्रकारचे नियोजन केलेले आहे. खरडलेल्या जमिनीसंबंधीचा तपशील नाही. दोन-तीन तालुक्यांत जास्त प्रमाणात पाऊस पडलेला आहे ही वस्तुस्थिती आहे.

समितीने विचारणा केली की, अमरावती जिल्ह्यात गेल्या वर्षी मोठ्या प्रमाणात पाऊस झाला व त्यामुळे मोठ्या प्रमाणात जमिनी खरडल्या गेल्या. या बाबतीत विधानसभेत अनेक लोकप्रतिनिधींनी मागणी केली की, खरडलेल्या जमिनीची नुकसानभरपाई वैयक्तिक स्वरूपात देण्यात यावी. त्या मागणीच्या अनुषंगाने खरडलेल्या जमिनींच्या बाबतीत रोजगार हमी योजनेतून न्याय देण्याची भूमिका शासनाकडून घेतली गेली. ती भूमिका आपण बजावली काय ? खरडलेल्या जमिनीच्या कामांबाबतची तुमच्याकडे मागणी आहे काय ? सरकार खरडलेल्या जमिनीच्या बाबतीत आपल्याला वेगळे पॅकेज देते. वैयक्तिक जमीनधारक आपल्या जमिनी सरळ करून घेतील त्या ठिकाणी काय कामे करणार आहात ? जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, या वर्षी पाऊस पडल्यामुळे आवश्यकतेनुसार कामांमध्ये बदल करण्याची मुभा आहे. खरडलेल्या जमिनीच्या बाबतीतील कामांची मागणी आली तर ती कामे करता येतील. अमरावती जिल्ह्यात १९०० हेक्टर जमीन खरडलेली आहे. पंचायत समितीनिहाय ती कामे करून घेण्यात येतील. सामूहिक अथवा सार्वजनिक वापरासाठीची जागा असेल ती कामे नरेगाच्या माध्यमातून करण्यात येतील.

समितीने प्रश्नावलीच्या माध्यमातून विचारणा केली की, सन २००८-०९ ते २०१०-११ या वर्षांमध्ये पाटबंधाऱ्यांच्या कामावरील एकूण नियोजन किती व किती प्रमाणात पूर्तता झाली आहे. त्याबाबत गोषवारा दिलेला आहे. सन २००८-०९, २००९-१०, २०१०-११ मध्ये काही ठिकाणी १७ टक्के, काही ठिकाणी १० टक्के, काही ठिकाणी १४ टक्के आणि काही ठिकाणी ३० टक्के अशा पद्धतीने ठिक-ठिकाणी खर्च केल्याची टक्केवारी आहे. सन २०१२-१३ या वर्षातील सप्टेंबर अखेर पर्यंत स्थानिक स्तर विभागाची खर्चाची टक्केवारी ८५ टक्के एवढी आहे आणि लघु पाटबंधारे विभाग, अमरावती यांची खर्चाची टक्केवारी ५७ टक्के आहे. सन २००८-०९ ते २०१०-११ या वर्षात खर्चाची टक्केवारी कमी का झाली ? त्या मागचे नेमके कारण काय ? कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, एमआरईजीएस

मधून काही खर्च झाला आहे. नियमित अंदाजपत्रकामधून कामे हाती घेतलेली असून ती कामे आता पूर्णत्वास आलेली आहेत. सन २००८-०९ व २००९-२०१० मध्ये जी कामे हाती घेतली होती, ती कामे पूर्ण झालेली आहेत.

समितीने पुढे विचारणा केली की, मागील आढावा घेत असताना प्रशासकीय मान्यता जेवढ्या रकमेला दिली आहे तेवढी कामे हाती घेतली होती. परंतु प्रशासकीय मान्यता रकमेशी खर्च केल्याची टक्केवारी २५ पेक्षा कमी आहे. टक्केवारी का कमी आहे ? हाती घेतलेली कामे झाली नाहीत काय ? रक्कम खर्च करण्यास काही अडचणी होत्या काय ? पाटबंधारे विभाग, जिल्हा परिषद, लघू पाटबंधारे तसेच लघू पाटबंधारे स्थानिक स्तर या विभागाची कामे पूर्ण झाली नाहीत काय ? कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, प्रशासकीय मान्यता मिळाल्यानंतर दोन वर्षांनी म्हणजे मागील वर्ष आणि या वर्षातही कामे सुरू होती. माहे फेब्रुवारी व मार्च महिन्यांत प्रशासकीय मान्यता मिळाली असेल तर ती कामे पुढील वर्षातील कामे धरली जातात. यातील काही कामे प्रगतीत असून काही कामे पूर्ण झालेली आहेत.

समिती सन २००८-०९ ते २०११-१२ या कालावधीत झालेल्या कामांचा आढावा घेत असून दुसऱ्या वर्षीदेखील कमीच खर्च आहे. पुढील वर्षी तरी कामांवर निधी खर्च झाला आहे काय? अशी समितीने विचारणा केली असता कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, ती कुशल कामे दुसऱ्या वर्षात आलेली आहेत. त्यामुळे निधी खर्च झाल्याचे मान्य केले.

समितीने विचारणा केली की, पुढील वर्षी कामांवर खर्च झाला असेल तर खर्चाची टक्केवारी वाढली पाहिजे होती, परंतु तसे दिसून येत नाही. नवीन कामे आणि मागील वर्षातील कामे यावर खर्च झाला असेल तर खर्चाच्या टक्केवारीत वाढ व्हावयास पाहिजे होती. त्यावर कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, सन २०१२-२०१३ या वर्षात खर्चाच्या टक्केवारीत वाढ झालेली आहे.

सन २००८-२००९ या वर्षात लघु पाटबंधारे, स्थानिक स्तर विभागाने २२ टक्के खर्च केला आहे. जिल्हा परिषद, लघु पाटबंधारे विभाग यांनी १७ टक्के खर्च केला. सन २००९-२०१० या वर्षात लघु पाटबंधारे विभाग यांनी १७ टक्के खर्च केला आहे. जिल्हा परिषद लघु पाटबंधारे विभागाचा खर्च १० टक्के एवढाच आहे. सन २०१०-२०११ या वर्षात स्थानिक स्तर विभागाचा खर्च १५ टक्के आणि लघु पाटबंधारे विभागाचा खर्च २३ टक्के आणि पाटबंधारे विभागाचा १४ टक्के खर्च झाला आहे. सन २०१२-२०१३ या वर्षात लघु पाटबंधारे, स्थानिक स्तर, अमरावती यांनी ८५ टक्के खर्च केला आहे. मागील चार वर्षात जेवढी रक्कम खर्च व्हावयास पाहिजे होती, तेवढी रक्कम खर्च झाली नाही. ती रक्कम पूर्णपणे का खर्च झाली नाही यासंबंधी समर्पक उत्तर मिळावे असे समितीने स्पष्ट केले असता कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, यामध्ये पहिल्या वर्षाची कामे आहेत व पुढच्या वर्षी प्रशासकीय मान्यता मिळालेली सुद्धा कामे आहेत.

समितीने पुढे विचारणा केली की, मागच्या वर्षी २५ टक्के सुद्धा रक्कम खर्च झाली नाही तरी प्रशासकीय मान्यता देण्याची घाई का केली गेली. मागील वर्षीची अपूर्ण कामे रहात असतील आणि ती कामेपुढील वर्षी पूर्ण होत नसतील तर पुढील वर्षातील कामांना प्रशासकीय मान्यता देण्याची गरज काय होती ? जर कामे झाली नसतील तर तसे समितीला सांगावे, त्याबाबतीत काही तक्रार नाही. अपूर्ण कामे पूर्ण कराल, त्याबद्दल काही तक्रार नाही. दिलेल्या अभिलेख्यांवरून स्पष्ट दिसून येते की, कामांसाठी पूर्णपणे निधी खर्च केला गेला नाही, तो का केला गेला नाही याची माहिती देण्यात यावी. यावर कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, अपूर्ण राहिलेली कामे पूर्ण करण्याचा प्रयत्न सुरू आहे.

विभागीय सचिव यानी सांगितले की, सन २००६ मध्ये एमआरईजीएस योजना त्या ठिकाणी सुरू झाली. सुरूवातीला तीन ते चार वर्षे त्यांना या योजनेची कार्यप्रणाली समजली नव्हती. संबंधित यंत्रणेच्या अधिकाऱ्यांनी जुन्या रोजगार हमी योजनेच्या पद्धतीने काम केले आहे. त्यामुळे सन २०१०-११ मध्ये स्ट्रीमलाईन झाले आहे. आता मात्र सदर योजनेचे काम व्यवस्थितपणे सुरूळीत चालले आहे.

समितीने विचारणा केली की, जिल्ह्यात एमआरईजीएस योजना सुरू झाली. सुरूवातीला तीन ते चार वर्षे या योजनेची कार्यप्रणाली यंत्रणेच्या अधिकाऱ्यांना समजली नव्हती. त्यामुळे यंत्रणेचा वेळ गेला या गोष्टी मान्य केल्या तरी पैसे खर्च झाले नाही ही वस्तुस्थिती अभिलेख्यांवरून दिसून येते. कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, सन २०१२-२०१३ मध्ये ८५ टक्के रक्कम खर्च झाली आहे. या वर्षी ३ कोटी रुपये खर्च केले आहेत. सन २०११-२०१२ या वर्षातील कामांनी गती घेतली आहे. त्या कामांवर रक्कम खर्च करण्यास संधी आहे. या वर्षी बऱ्यापैकी निधी खर्च करण्यात आला आहे.

समिती मागील तीन-चार वर्षांची तुलनात्मक चर्चा करीत आहेत. यावर्षी खर्च बऱ्यापैकी झालेला आहे. मागील वर्षांमध्ये ही रक्कम खर्च का केली नाही हा महत्त्वाचा विषय आहे. यावर्षी जो खर्च केला आहे, तो किती तालुक्यात केला आहे असे समितीने विचारले असता, कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, अमरावती जिल्ह्यातील सर्वच तालुक्यांत खर्च केला आहे.

समितीने पुढे विचारणा केली की, या योजनेच्या कामांवर मजूर उपलब्ध व्हावेत म्हणून किती ठिकाणी प्रबोधन केले गेले, या योजने अंतर्गत काम सुरू करण्यासाठी किती ठिकाणी प्रत्यक्षात भेटी दिल्या, किती प्रमाणात प्रतिसाद मिळाला? प्रत्येक तालुक्यात या योजने अंतर्गत किती कामे सुरू झाली, किती गावांमध्ये कामे झाली याची विगतवारी समितीला सांगावी. तसेच ३ कोटी रुपये खर्च झाले. या खर्चाची तालुकानिहाय माहिती देण्यात यावी. त्या तलावाजवळ लोकवस्ती आहे काय? तालुकानिहाय कामे सांगता येतील काय ? तालुकानिहाय कामांची माहिती देऊ शकता काय ? यावर कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, कामाची यादी आहे. अचलपूर तालुक्यात ६ कामे आहेत. इसेगाव शेत रस्ता, ता अचलपूर, तलावाच्या बुडीत क्षेत्रातून बाहेर काढलेल्या रस्त्याचे काम आहे. तलावाच्या बुडीत क्षेत्रातून रस्ता जात होता, त्याला फाटा दिला आहे. संपूर्ण गोषवारा नाही. कामांची यादी उपलब्ध आहे. अचलपूर, तिवसा, धामणगाव रेल्वे, चांदूर बाजार, दर्यापूर, धारणी या तालुक्यांमध्ये कामे घेण्यात आली होती.

तालुकानिहाय घेण्यात आलेल्या कामांची यादी, त्यावर झालेला खर्च ही माहिती आता उपलब्ध आहे का ? रोजगार हमी योजनेवर शासनाचा बराच खर्च होतो. ३ कोटी रुपये खर्च झाल्याची माहिती दिली आहे. त्या कामांची सविस्तर माहिती मिळण्याची समितीने अपेक्षा ठेऊ नये का ? पूर्ण झालेल्या कामांची सद्यःस्थिती काय आहे हे समितीला जाणून घ्यावयाचे आहे असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, तालुकानिहाय गोषवारा नाही, परंतु कामनिहाय माहिती उपलब्ध आहे.

समितीने विचारणा केली की, मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, माहे डिसेंबर अखेर पर्यंत ३४ कोटी रुपये खर्च झाले आहेत. त्या खर्चाची सविस्तर माहिती देण्यात यावी. कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, सन २०१२-१३ या वर्षामध्ये धारणी तालुक्यात ५४, चिखलदरा तालुक्यात ५० व इतर तालुक्यांमध्ये ११८ कामे सुरू होती.

अमरावती जिल्ह्यात चिखलदरा, धारणी व अचलपूर या तीनच तालुक्यांमध्ये जास्त कामे झाली आहेत. सन २००८-०९ या वर्षाची माहिती विचारलेली असताना सन २०१२-१३ या वर्षाची माहिती देण्यात येत आहे. लघु पाटबंधारे, स्थानिक स्तर या यंत्रणेकडे जी माहिती असेल ती त्यानी द्यावी असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, सन २००८-०९ मध्ये जलसंधारण विभागामार्फत चिखलदरा तालुक्यातील कन्हेरी, मेहरियम, खडीमल, ओढापाटी, गिरगुटी, परसापूर, गंगारखेडा, डोमा, काजलडोह येथे छोट्या साठवण तलावाची तसेच गाव तलाव नुतनीकरणाची कामे घेण्यात आली होती. मोर्शी तालुक्यातील पिंपळखुटा मोठा, तरोडा, पातूर-१, नेरपिंगळाई, डोमक येथे नाला सरळीकरणाची कामे घेण्यात आली होती. यापैकी छोटा साठवण तलाव, कन्हेरी येथील कामावर २४.८७ लाख रुपये, डोमा-३ येथील कामावर २४.८८ लाख रुपये, मेहरियम येथील कामावर २४.२४ लाख रुपये, गंगारखेडा येथील कामावर २४.६३ लाख रुपये, काजलडोह येथील कामावर २९.७ लाख रुपये, खडीमल येथील कामावर ३८.८१ लाख रुपये, ओढापाटी येथील कामावर ६.७८ लाख रुपये, गिरगुटी येथील कामावर ३.०९ लाख रुपये, थुगाव (पिं.) येथील कामावर ११.६१ लाख रुपये, आखतवाडा येथील कामावर ५.१२ लाख रुपये, परसापूर येथील कामावर २ लाख रुपये खर्च झालेला आहे.

समितीने विचारणा केली की, साठवण तलावाची कामे पूर्ण झाली आहेत त्या तलावात पाणी साठले आहे का ? साठवण तलावातील पाणी शेतीसाठी वापरले जाते की पिण्यासाठी वापरले जाते, शेतीसाठी दिले जात असेल तर त्यातून किती जमीन ओलिताखाली आली आहे ? साठवण तलावातील पाणी मिळण्यासाठी किती शेतकऱ्यांनी परवानगी मागितली आहे, नसेल तर परवानगीशिवाय लोकांना पाणी दिले आहे का ?

अधिकाऱ्यांना माहिती देता येत नसल्यामुळे ही कामे पूर्ण झालेली नाहीत, केवळ कागदोपत्री कामे झाली आहेत. साठवण तलावामुळे सिंचन क्षमतेमध्ये झालेली वाढ, नरेगा व रोहयोमुळे किती शेतकऱ्यांना लाभ झाला आहे याची माहिती अधिकारी देऊ शकत नाही असे समितीला दिसून आले.

सन २००८-०९ मध्ये लघुपाटबंधारे, जिल्हा परिषद व जलसंधारण विभागाने प्रशासकीय मान्यतेपेक्षा कमी खर्च का केला ते पुन्हा एकदा सचिवांनी सांगावे असे समितीने पुढे स्पष्ट केले असता, विभागीय सचिव यानी सांगितले की, देशातील काही राज्यांमध्ये सन २००६ ते २००८ या कालावधित नरेगा सुरू झाली. महाराष्ट्रामध्ये मात्र १९७७ पासून रोजगार हमी योजना सुरू होती. बाकीच्या राज्यांमध्ये मात्र नरेगा नव्यानेच सुरू झाल्यामुळे तेथे या योजनेची सुरूवात लगेच झाली. केंद्र सरकारने कायदा करीत असताना नवीन योजनेत ग्रामपंचायतींना सामावून घेतल्यामुळे राज्यातील यंत्रणांमध्ये संभ्रमाचे वातावरण होते. राज्यामध्ये सन २०११ मध्ये या योजनेची कार्यप्रणाली सुरू झाल्यानंतर सन २०११-१२ पासून या योजनेचे काम चारपट वाढले आहे. त्यावेळच्या यंत्रणांनी या योजनेची कार्यपद्धती समजून घेतली नव्हती. आता या योजनेच्या कार्यपद्धतीमध्ये बराच बदल केलेला आहे.

समितीने विचारणा केली की, केंद्र शासनाने नवीन योजनेतील कामांमध्ये ग्रामपंचायतींचा ५० टक्के सहभाग ठेवलेला आहे. हे खरे असले तरी यंत्रणा मात्र त्याच आहेत. त्यांना ही योजना नवीन नव्हती. त्यामुळे संभ्रमाचे वातावरण निर्माण होण्याचे कारण नव्हते. विभागीय सचिव यानी सांगितले की, आता कामाच्या पद्धतीत बदल झालेला आहे.

कोणत्या गावामध्ये कोणते काम झाले व त्याचा किती लोकांना लाभ मिळाला आहे याची माहिती अधिकाऱ्यांना माहीत नसेल तर ते योग्य नाही असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग यानी सांगितले की, वर्षनिहाय व कामनिहाय माहिती आहे, तालुकानिहाय माहिती नाही. सन २००८-०९ मध्ये जिल्हा परिषदेमार्फत पाटबंधारेची ६७ कामे घेण्यात आली होती. त्यामध्ये गाव तलावांच्या दुरुस्तीची, नुतनीकरणाची, नाला सरळीकरणाची कामे घेतली होती. या कामांवर ९५.३३ टक्के खर्च झाला आहे.

मुख्य कार्यकारी अधिकाऱ्यांनी झालेली कामे तपासली आहेत काय ? या कामाची सद्य:स्थिती काय आहे ? त्या कामांचा दर्जा कसा आहे ? प्रत्यक्षात कामे झाली आहेत का ? ते समजणे आवश्यक आहे. नवीन योजनेची कामे प्रत्यक्षात झालेली नाहीत, कागदोपत्री झालेली आहेत असे वाटते. त्यामुळे अधिकाऱ्यांनी कामांची माहिती देत असताना तक्त्यामध्ये संपूर्ण तपशीलासह माहिती दिली पाहिजे. एखादा प्रश्न विचारल्यानंतर उपप्रश्न विचारले जातात. त्याची माहिती अधिकाऱ्यांजवळ असावयास पाहिजे. अधिकारी तयारीनिशी आलेले नाहीत. अधिकाऱ्यांनी समितीला गांभीर्याने घेतलेले नाही. साठवण तलावामध्ये पाणी साठले आहे की नाही हा महत्वाचा मुद्दा आहे. कामे प्रत्यक्षात झाली आहेत किंवा नाही, अधिकाऱ्यांनी ही कामे चेक केली आहेत का ? अशी समितीने विचारणा केली असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी यानी सांगितले की, साठवण तलावामुळे व गाव तलावाच्या दुरुस्तीमुळे सिंचन क्षमता किती वाढली आहे याची माहिती नाही. परंतु कामनिहाय माहिती आहे. विभागीय सचिवानी सांगितली की, आता देण्यात आलेल्या माहितीनुसार किती कामे झाली आहेत, त्यामुळे किती लोकांना लाभ झाला आहे, याबाबतची माहिती संबंधितांनी महिनाअखेर पर्यंत द्यावी.

समितीने पुढे असेही स्पष्ट केले की, ३ कोटी रुपयांचा खर्च झालेला असताना त्याचा किती लोकांना लाभ झाला आहे ते समितीला समजणे आवश्यक असून त्यासंदर्भातील माहिती तीन आठवड्यात द्यावी..

समितीने विचारणा केली की, सामाजिक वनीकरण विभागातंर्गत एमआरईजीएस मध्ये कामे घेण्याबाबत नियोजन का करण्यात आले नाही ? याबाबत सविस्तर माहिती देण्यात यावी. उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यानी सांगितले की, जास्तीत जास्त कामे मजुरांना उपलब्ध करून द्यावयाची होती. जशी कामे पूर्ण होतील तशी रक्कम विभागाला प्राप्त होते.

गेल्या पाच वर्षात ४३६८ लाख रुपयांचे अंदाजपत्रक तयार केले होते, त्यापैकी या विभागास फक्त ९४४ लाख रुपये मिळाले. अंदाजपत्रकापेक्षा कमी रक्कम प्राप्त झाली, याची कारणे काय आहेत ? असे समितीने विचारले असता, उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यानी सांगितले की, कोणत्याही गावामध्ये मजुरांनी काम मागितले तर त्यांना काम उपलब्ध व्हावे, असा विभागाचा प्रयत्न असतो.

समितीने विचारणा केली की, सन २०१२-२०१३ मध्ये एकूण ७३ कामे प्रस्तावित होती. या ७३ कामांसाठी विभागाने २०९४.८० लाख रुपयांचे अंदाजपत्रक तयार केले आणि त्यापैकी १९६.७४ लाख रुपये प्राप्त झाले आणि तेवढीच रक्कम खर्च झाली. एवढ्या जास्त रकमेचे अंदाजपत्रक कशासाठी तयार केले ? विभागीय सचिव यानी सांगितले की, सामाजिक वनीकरणच्या अधिकाऱ्यांनी एखाद्या तालुक्याचे उदाहरण देऊन खुलासा करावा. त्या तालुक्यात किती काम सुरू केले आणि त्यावर किती रक्कम खर्च झाली, याची खुलासेवार माहिती द्यावी. उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यानी सांगितले की, विभागात कर्मचारी वर्ग खूप कमी आहे.

समितीने स्पष्ट केले की, अंदाजपत्रक, पैसे मिळणे आणि कर्मचारी वर्ग यांचा काय संबंध येत आहे? तसेच विभागाचे उद्दीष्ट काय होते ? उद्दीष्टांच्या प्रमाणात अंदाजपत्रक किती केले आणि अनुपालन का झाले नाही, असा प्रश्न विचारण्यात आला तरी अधिकारी उत्तर देत नाहीत ही बाब योग्य नाही. त्यावर जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की,सामाजिक वनिकरणाची प्रत्यक्षात कामे कमी आहेत. सन २००८-२००९ पासून ते सन २०१२-२०१३ पर्यंत दरवर्षी १० टक्के, २० टक्के बजेट वाढवून प्रत्येक गावाला दोन कामे मिळावीत, यादृष्टीकोनातून जास्तीत जास्त अंदाजपत्रक तयार केले आहे. १९८१ गावे मिळून प्रत्येक गावातील सामाजिक वनीकरण आणि जलसंधारणांची दोन कामे गृहित धरुन ढोबळमानाने अंदाजपत्रक तयार केलेले दिसत आहे. जवळपास २० टक्क्यापर्यंत काम केलेले आहे.

अमरावती विभाग वगळता संपूर्ण महाराष्ट्रात सामाजिक वनीकरणाची १०० टक्के कामे झालेली आहेत. ५० टक्के काम यंत्रणेने केली पाहिजेत, परंतु, फक्त २० टक्क्यापर्यंत पोहोचत आहात. इतर जिल्ह्यांमध्ये नॅशनल हायवे, स्टेट हायवे, एम.डी.आर. आणि ओ. डी. आर. रस्त्यांच्या दोन्ही बाजूने सामाजिक वनीकरणातंर्गत मोठया प्रमाणावर कामे झालेली आहेत असे समितीने स्पष्ट केले असता, जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, पूर्वी ११४ लाख रुपये खर्च झाले, त्यानंतर १९३ लाख रुपये आणि नंतर २९५ लाख रुपये याप्रमाणे सामाजिक वनीकरणांच्या कामावर खर्च झालेले आहेत.

समितीने विचारले की, सन २०१२-२०१३ या आर्थिक वर्षात सामाजिक वनीकरणाची कामे झालेली आहेत का ? ७३ कामांचे वर्गीकरण कसे केले आहे ? जिल्हाधिकारी यानी सांगितले की, सन २०१२-२०१३ मध्ये वन विभागाची जास्त कामे झालेली असून सामाजिक वनीकरणाची कामे कमी झाली आहेत. उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यानी सांगितले की, रोड साईड प्लॅनिंगचे काम केले आहे. ज्या गावात ग्राम पंचायतीची कामे सुरू असतील तेथील मजूर सामाजिक वनीकरणाच्या कामासाठी मिळत नाहीत. मेळघाट, धारणी येथे ग्रामपंचायतीची कामे सुरू आहेत.

सामाजिक वनीकरण विभागाचे नियोजन कसे चूकीचे आहे या विषयावर समिती चर्चा करीत आहे. २००० लाख रुपयांचे नियोजन का केले? कामावर झालेला खर्च, नियोजनाबद्दल गंभीर नाहीत. विभागाने केलेले नियोजन चुकीचे आहे, यासंबधीचा खुलासा होणे समितीला अपेक्षित आहे असे समितीने स्पष्ट केले असता, विभागीय सचिव यानी सांगितले की, यावर्षी रोड साईड प्लॅनिंगची मोठ्या प्रमाणात कामे केली आहेत. ही कामे जवळपास सर्वच तालुक्यात झालेली आहेत. या तालुक्यांमध्ये बिहार पॅटर्न लावलेला आहे. सन २०११-२०१२ मध्ये सेल्फ ऑफ वर्कस ॲड करून ठेवलेले आहे. अद्यावत डी.एस.आर. नसल्यामुळे कामे करता आली नाहीत. अमरावती विभागात श्री.दिलीप सिंह हे सहसंचालक असून त्यांनी अमरावती आणि बुलढाणा जिल्ह्यात चांगले काम केले आहे. महाराष्ट्र राज्यात जवळपास दोन हजार किलोमीटरची कामे झाली आहेत. सामाजिक वनीकरण विभागाच्या अधिकाऱ्यांनी प्रत्यक्षात किती काम केले, याबाबतची माहिती हायलाईट करणे आवश्यक आहे.

समितीने भेट दिली असता सामाजिक वनीकरण विभागाची एक, दोन ठिकाणाची कामे चांगली झालेली दिसली. ग्राम पंचायतीचे एक दोन ठिकाणचे काम बोगस होते. नियोजन करीत आहात, परंतु त्या प्रमाणात पैसे खर्च होतात काय, ही वस्तुस्थिती समितीसमोर विशद केली पाहिजे असे समितीने स्पष्ट केले.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**सन २००८-०९ ते २०१२-१३ या वर्षाचे कामाचे वार्षिक नियोजन आराखडे वार्षिक नियोजनाच्या मार्गदर्शक तत्वानुसार करण्यात आले नाही. विविध यंत्रणांनी विहित मार्गदर्शक तत्वानुसार कामे घेण्यासाठी पुरेसे प्रयत्न केले नाहीत. परिणाम स्वरूप पाच वर्षात रोजगार हमी योजनेची कामे निर्माण झाली नसल्याने लोकांना कामे मिळाली नाहीत ही बाब अत्यंत्य गंभीर आहे असे समितीचे स्पष्ट मत आहे. अतः यापुढे कामाचे वार्षिक नियोजनाचे आराखडे योग्य प्रकारे व विहित मुदतीत करण्याची दक्षता घ्यावी, अशी समितीची शिफारस आहे.**

**(२) निधीचा पुरवठा व खर्च :—**

जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेतील माहितीच्या अनुषंगाने समितीने ' निधीचा पुरवठा व खर्च' या संदर्भात दिलेला गोषवारा विचारात घेतला. त्यानुसार सन २००८-०९ ते २०१२-१३ पर्यंतची तत्क्यामध्ये दिलेल्या माहितीमध्ये मजुरांच्या सोयी सवलतीसाठी खर्च झालेली रक्कम व त्याची एकूण खर्च रकमेशी टक्केवारीची आकडेवारी ०.६५ एवढी नमूद केली आहे. ३ टक्क्यांपर्यंत या कारणाकरिता खर्च करण्याची मुभा असताना ३ टक्क्यापेक्षा कमी खर्च का केला ? मजुरांच्या मजूरीकरिता खर्च झालेली रक्कम रुपये १११.८० लाख एवढी नमूद केली आहे. ही आकडेवारी विचारात घेतली तर मजुरांच्या सोयी सवलतीवर फक्त ६५ हजार रुपये एवढीच रक्कम खर्च केली आहे. तसेच सन २००८-०९ व २००९-१० या वर्षात कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद बांधकाम विभाग यानी मजुरांच्या सोयी सवलतीवर खर्च केलेला नाही अशी समितीने विचारणा केली असता, कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, सन २००८-०९ या वर्षामध्ये अकुशल कामे झालेली नाहीत. कुशल कामावर खर्च झालेला आहे. त्यामुळे येथे खर्च दिसत नाही. त्या वर्षी मजुरांची कामे सुरू नव्हती. एमआरएजीएसच्या कामाचे उद्दिष्टे होती. इजीएसची अपूर्ण कामे पूर्ण करण्याचे उद्दिष्ट होते.

समितीने अशी विचारणा केली, मागील अपूर्ण कामे पूर्ण केली होती. त्यामुळे मजूरीवर खर्च झालेला नाही. राहिलेल्या पाच वर्षामध्ये काहीच कामे सुरू केलेली नाही. सन २००८-०९ व २००९-१० मध्ये काम केले नाही. मग सन २०१०-११ मध्ये काम कसे काय केले आहे? कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, ही कामे एमआरइजीएस मधील आहेत. रुपये ४.१२ लाख पेमेंट हे त्या वर्षी आले असून खर्ची पडले आहे.

उपरोक्त बाबीच्या संदर्भात नमूद करण्यात आलेली टक्केवारी प्रत्येक ठिकाणी चूकीची आहे. दोन वर्षाची बेरीज करून टक्केवारी काढली आहे. प्रत्यक्षात काम पाच वर्षाचे आहे. चूकीची टक्केवारी काढली आहे. सदर टक्केवारी कोणी काढली. संबंधितानी चूकीची दुरुस्ती करावी, चूकीबद्दल शुध्दिपत्रक काढावे. ज्यांनी चूक केली आहे त्यांना मौखिक ताकिद देण्यात यावी, असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, ज्यावर्षी निधी आला तो त्या त्या वर्षी खर्च झालेला आहे. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद यांनी सांगितले की, एकूण रक्कम रुपये १६.७८ लाख प्राप्त झाली होती. ती त्या त्या वर्षी खर्च झालेली आहे. त्यामुळे येथे दिलेली टक्केवारी बरोबर आहे. समितीने विचारले की, पाच वर्षाची टक्केवारी कशी दाखविली आहे? मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद यानी सांगितले की, कुशल बाबीवर रक्कम रुपये १६.७८ लाख इतका निधी खर्च करण्यात आला आहे.

पुस्तकात नमूद केलेली टक्केवारी बरोबर आहे काय? पुस्तकातील पाने मागेपुढे लागल्यामुळे गोंधळ झालेला आहे. पान क्रमांक ११ वर जी माहिती आहे ती काही पुस्तकात पान क्रमांक ७ वर आहे. एवढा गोंधळ आता पर्यंत कधीच पाहिलेला नाही. तसेच पुस्तकाच्या नियोजनामध्ये असणारा गलथानपणा योग्य आहे असे समितीला वाटत नाही, असे समितीने स्पष्ट करून सदरहू प्रश्न प्रलंबित ठेवून समितीने पुढील प्रश्न घेतला.

जिल्हा बैठकांच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी, २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली.त्यावेळी समितीने प्रश्नावलीच्या माध्यमातून विचारणा केली की, कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग अमरावती/अचलपूर/विशेष प्रकल्प विभाग क्रमांक-१ अमराती/ जिल्हा परिषद बांधकाम विभाग, पाटबंधारे विभाग जिल्हा परिषद व जिल्हा अधीक्षक कृषि अधिकारी या यंत्रणांनी मजुरांच्या मजूरीवर झालेला खर्च शून्य दर्शविण्याची कारणे काय आहेत ?

उपरोक्त बाबीच्या अनुषंगाने पुढीलप्रमाणे लेखी माहिती देण्यात आली :—

(१) कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, विभाग क्र. अमरावती- सन २००८-०९ व २००९-१० या वर्षामध्ये या विभागाअंतर्गत अकुशल कामे झालेली नाही फक्त कामावर खर्च झालेला आहे. त्यामुळे मजुरांच्या मजूरीवर झालेला खर्च शून्य दर्शविण्यात आला आहे. (२) कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर- रोहयो अंतर्गत हया विभागामध्ये हया कालावधीत एक ही काम मंजूर नसल्यामुळे मजुरांच्या मजूरीवर झालेला खर्च शून्य दर्शविण्यात आलेला आहे. (३) कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती- या विभागांतर्गत रोहयो कामावरील कुशल बाबींवर कंत्राटदारांच्या देयकांचे भुगतान निधी दर्शविण्यात आलेला आहे. तो पूर्ण कुशल कामावरील कंत्राटदारांचे देयक भुगतान असल्याने मजुरांच्या मजूरीवर झालेला खर्च निरंक दर्शविण्यात आलेला आहे. (४) कार्यकारी अभियंता, जि.प.लघुसिंचन विभाग, अमरावती, या विभागाची सर्व कामे खचलेल्या विहीर दुरुस्तीची असून मुल्यांकन प्रमाणे रु.२५००० च्या मर्यादेत थेट लाभधारकांच्या धनादेशाद्वारे वितरीत केले आहेत व विहीरी दुरुस्तीचे काम लाभार्थ्यांनी मंजूरीचे सुविधेसह करून घेतलेले आहे. (५) कार्यकारी अभियंता, जि.प बांधकाम विभाग, अमरावती, रोजगार हमी योजना सन २००३-०४ अंतर्गत येवदा ते ईटको रस्ता बांधकामास मा.जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी त्यांचे आदेश क्रमांक २३८/२००३ दिनांक ३० मे,२००३ अन्वये रुपये २४.९८ लक्ष रुपयास प्रशासकीय मंजूरी प्रदान केली आहे. अकुशल भागाचे कामास दिनांक ५ मे,२००४ रोजी सुरूवात करून दिनांक ३१ जानेवारी, २००७ ला पूर्ण करण्यात आले असून अकुशल कामावर एकूण रुपये १७.०८ लक्ष खर्च करण्यात आलेला आहे. या कामामधील कुशल भागाचे कामास दिनांक १६ मे, २००७ ला सुरूवात करण्यात आलेली असुन दिनांक १६जून,२००७ ला पुर्ण करण्यात आलेले आहे तथा या कुशल कामाचे रुपये ६.७७ लक्ष देयक निधी अभावी प्रलंबित होते. सदरहू देयक सन २०१२-१३ मध्ये अदा करण्यात आले असल्याने सन २०१२-१३ वर्षात मंजूराच्या मजूरीवर खर्च शून्य दर्शविण्यात आलेला आहे. रोजगार हमी योजना सन २००३-०४ अंतर्गत फाजलापूर ते देवरा रस्ता बांधकामास मा.जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी त्यांचे आदेश दिनांक ३ नोव्हेंबर,२००३ अन्वये रुपये १२.७४ लक्ष रुपयास प्रशासकीय मंजूरी प्रदान केली आहे. अकुशल भागाचे कामास दिनांक २४ नोव्हेंबर,२००३ रोजी सुरूवात करून दिनांक ३० नोव्हेंबर,२००५ ला पूर्ण करून त्यावर एकूण रुपये ३.८६ लक्ष खर्च करण्यात आला आहे. सदर कुशल भागाचे कामास दिनांक १० नोव्हेंबर,२००५ ला सुरूवात करण्यात आलेली असून दिनांक ७ नोव्हेंबर,२००६ ला पूर्ण करून रुपये ३.६२ लक्ष चे देयक निधी अभावी प्रलंबित होते. सदरहू देयक सन २०१२-१३ मध्ये अदा करण्यात आले असल्याने सन २०१२-१३ वर्षात मजुरांच्या मजूरीवर खर्च शुन्य दर्शविण्यात आलेला आहे. रोजगार हमी योजना सन २००४-०५ अंतर्गत उदखेड ते उदखेड गाव तलाव रस्ता बांधकामास मा.जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी त्याचें आदेश क्रमांक १८०२ दिनांक १७ फेब्रुवारी,२००५ अन्वये रुपये ८.८१ लक्ष रुपयास प्रशासकीय मंजूरी प्रदान केली आहे. अकुशल भागाचे कामास दिनांक २ मे,२००५ रोजी सुरूवात करून दिनांक ३० जून,२००६ ला पूर्ण करून त्यावर एकूण ४.०९ लक्ष खर्च करण्यात आला आहे. सदरहू कुशल भागाचे कामास दिनांक ५ जानेवारी,२००७ ला सुरूवात करण्यात आलेली असून दिनांक २ मे,२००७ ला पुर्ण करून रुपये २.२७ लक्ष चे देयक निधी अभावी प्रलंबित होते. सदरहू देयक सन २०१२-१३ मध्ये अदा करण्यात आले असल्याने सन २०१२-१३ वर्षात मजुरांच्या मजूरीवर खर्च शुन्य दर्शविण्यात आलेला आहे. रोजगार हमी योजना सन २००५-०६ अंतर्गत लोणी ता.वरुड येथील अंतर्गत रस्त्याचे बांधकामास मा.जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी त्याचे आदेश क्रमांक ११२ दिनांक २३ जानेवारी,२००६ अन्वये रुपये ७.५० लक्ष रुपयास प्रशासकीय मंजूरी प्रदान केली आहे. सदर रस्त्याचे अकुशल भागाचे कामास दिनांक ३१ जानेवारी, २००८ रोजी सुरूवात करून दिनांक १५ जुलै,२००८ ला पूर्ण करण्यात आले व त्यावर एकूण १.०७ लक्ष खर्च करण्यात आला आहे या कामाचे कुशल भागाचे कामास दिनांक १ जुलै,२००८ ला सुरूवात करण्यात आलेली असून दिनांक २५ जुलै,२००८ ला पूर्ण करण्यात आले. कुशल कामाचे रुपये ४.१२ लक्ष चे देयक निधी अभावी प्रलंबित होते. सदर देयक सन २०१०-११ मध्ये अदा करण्यात आले असल्याने सन २०१२-१३ वर्षात मजुरांच्या मजूरीवर खर्च शून्य दर्शविण्यात आलेला आहे.

यानंतर समितीने विचारणा केली की, निधीचा पुरवठा व खर्च या विवरणपत्रात मजुरांच्या मजूरीवरील खर्च झालेली व मजुरांच्या सोई सवलतीवर खर्च झालेली रक्कम दर्शवितांना त्यांची एकूण रकमेशी टक्केवारी का दर्शविण्यात आली नाही? उपायुक्त,रोहयो यानी सांगितले की, सन २००८ ते २०१३ पर्यंतची आकडेवारी दाखविलेली आहे. सन २००८ ते २०१० या कालावधीत मजुरांच्या सोई सवलतींवर झालेला खर्च दाखविला नव्हता. सन २०११ ते सन २०१३ या कालावधीत फक्त कुशल कामेच हाती घेण्यात आली आहेत त्यामुळे मजुरांच्या सोई सवलतींवर खर्च झाला नाही.

कुशल कामांवर ३३७०/- लाख रुपये खर्च झाला आहे, याबाबतचा स्पष्ट खुलासा करावा असे समितीने स्पष्ट केले असता, उपायुक्त, रोहयो यानी सांगितले की, सन २००८ ते २०१० या कालावधीत खरडलेल्या जमिनींचा मोबदला म्हणून अनुदान स्वरुपात जे पैसे आले होते, त्यात शेतकऱ्यांच्या शेतातील कामांची दुरुस्ती करून घेतली आहे म्हणून हा आकडा वाढलेला आहे.

समितीने विचारणा केली की, वैयक्तिक लाभार्थ्यांना मिळालेली कुशल कामाची रक्कम रोजगार हमी योजनेच्या कामात समाविष्ट करता येते का ? यात गृहित धरलेली रक्कम बाजूला केली तर ही टक्केवारी निश्चितपणे घसरेल. उपायुक्त,रोहयो यानी सांगितले की, हे काम राज्याच्या रोजगार हमी योजनेतील आहे. त्या वर्षात रक्कम खर्च झाली नव्हती म्हणून ती रक्कम समाविष्ट केली आहे. जास्तीत जास्त कुशल कामे झालेली

आहेत. विभागीय सचिवांनी सांगितले की, वैयक्तिक कामे ही वेगवेगळी दाखविणे आवश्यक आहे. यामध्ये सार्वजनिक काम मिसळणे चुकीचे आहे. सन २००६ मध्ये अकुशल काम पूर्ण झाले आहे. धरणातील गाळ काढणे इत्यादी, ही कामे राज्य रोजगार हमी योजनेमधील बाकी आहेत. जून २०१४ पर्यंत उर्वरित कामे पूर्ण करावीत, असे लेखी आदेश विभागातर्फे दिलेले आहेत. पूर्वी १०००० कामे प्रलंबित होती, आता केवळ ९०० कामे प्रलंबित असून ही कामे उस्मानाबाद, बीड, जालना आणि लातूर या जिल्ह्यांतील आहेत.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**१.** रोजगार हमी योजनेतून करण्यात आलेल्या अकुशल कामानंतर कुशल कामे वेळेत होणे आवश्यक आहे. कुशल कामे न केल्यास अकुशल कामे वाया जातात याची जाणीव सर्व यंत्रणांना असतानाही जिल्ह्यात अनेक कुशल कामासाठी निधीची मागणी करण्यात आली नाही. त्यामुळे काही ठिकाणच्या अकुशल कामांतर्गत केलेली कामे पावसाळ्यात वाहून गेली तर तलाव मातीने भरुन गेले ही बाब अत्यंत गंभीर असून याला यंत्रणा जबाबदार असल्याने अशा वाया गेलेल्या कामांशी संबंधितांवर कडक कारवाई करण्यात यावी व केलेल्या कारवाईची माहिती समितीला तीन महिन्यांत सादर करावी अशी समितीची शिफारस आहे.

**२.** यंत्रणानी कामाचे नियोजन न केल्याने निधीची मागणी झाली नाही व असलेला निधी खर्च झाला नाही ही बाब विकासाच्या दृष्टीने गंभीर आहे याची जाणीव सर्व संबंधिताना देण्यात यावी व भविष्यात प्राप्त होणारा निधी योग्य रितीने खर्च करण्यासाठी योग्य ते नियोजन करण्यासंदर्भात यंत्रणांच्या सर्व संबंधित अधिकाऱ्यांना सक्त सूचना द्याव्यात व या संबंधी केलेल्या कार्यवाहीची माहिती समितीला तीन महिन्यात देण्यात यावी अशीही समिती शिफारस करीत आहे.

**(३) मजुरांच्या सोयीसवलतींवर करण्यात आलेला खर्च :—**

"मजुरांच्या सोई सवलतींवर करण्यात आलेला खर्च" या संदर्भात जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेमधील माहितीनुसार समितीने विचारणा केली की, मजुरांच्या सोयी सवलतीवर किती टक्के खर्च करण्यात आलेला आहे? कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, मजुरांच्या सोयी सवलतीवर २३ टक्के खर्च करण्यात आलेला आहे.

एकूण खर्चाच्या २ टक्के खर्च मजुरांच्या सोयी सवलतीवर करण्यात आलेला आहे. हत्यारांना धार लावण्याचा खर्च तसेच मजुरांच्या लहान मुलांना सांभाळण्याचा खर्च वेगवेगळा दाखविलेला आहे. खरे म्हणजे हा मजुरांच्या सोयीसवलतीवरील एकच खर्च आहे असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, मजुरांच्या लहान मुलांना सांभाळण्यासाठी ०.०७२ टक्के खर्च झाला आहे तसेच मजुरांना पिण्याचे पाणी पुरविण्यासाठी लावण्यात आलेला बैलबाडीवरील खर्च ०.२३२ टक्के झाला आहे. हा खर्च एकूण खर्च झालेल्या रक्कमेच्या २.९१ टक्के झालेला आहे. त्यावर समितीने विचारणा केली की, २.९१ टक्के खर्च कशावरुन काढलेला आहे? कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, हा खर्च मजुरांसाठी सोयी सुविधा, पिण्याचे पाणी, मजुरांच्या लहान मुलांना सांभाळणे, हत्यारांना धार लावणे याच्या एकूण खर्चाच्या २.९१ टक्के खर्च झालेला आहे.

सन २००८-०९ मध्ये एकूण कामावरील खर्च १०.४४ लाख झाला असून मजुरांच्या सोयी सवलतीवर ०.७२ लाख खर्च झाला असून सोयी सुविधांवर ०.३०४ लाख खर्च झाला आहे. परंतु हा खर्च एकूण खर्चाच्या २.९१ टक्के येतो असे समितीने स्पष्ट केले असता जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी सांगितले की, ३०४ कामांवरील खर्च १०.४४ लाख असून मजुरांच्या सोयी सवलतीवर २.९१ टक्के खर्च झालेला आहे.

जिल्हा बैठकीच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली. त्यावेळी समितीने विचारणा केली की, सन २००८-०९ ते सन २०१०-११ या कालावधीत मजुरांच्या सोई सवलतींवर खर्च करण्यात आलेल्या रक्कमेमध्ये तफावत असण्याची कारणे काय आहेत, याबाबत खुलासा करावा. कॉन्ट्रॅक्ट पद्धतीने काम करून घेतले आहे त्यामुळे हा खर्च कमी झालेला आहे काय? यावर विभागीय सचिवांनी होकारार्थ उत्तर दिले.

सन २०११-१२ व २०१२-१३ या वर्षामध्ये मजुरांच्या सोई सवलतींवर करण्यात आलेल्या खर्चासंदर्भात माहिती न दर्शविण्याची कारणे काय, याबाबत खुलासा करावा असे समितीने स्पष्ट केले असता जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, सन २०११-१२ ते सन २०१२-१३ या कालावधीत रोहयोची कामे सुरू नव्हती. या कालावधीत मग्रारोहयोची कामे सुरू होती. त्यामुळे मजुरांच्या सोई सवलतींवर खर्च दर्शविण्यात आलेला नाही.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

मजुरांच्या सोई सवलतीवर खर्च करणे शासन निर्णयानुसार बंधनकारक आहे तथापि, सन २००८ ते २०१३ या वर्षात जिल्ह्यातील यंत्रणा मजुरांच्या सोयी सवलतीवर खर्च केलेल्या रक्कमेचे नेमके तपशील देण्यास असमर्थ ठरल्याचे समितीचे मत आहे. जिल्ह्यातील यंत्रणानी रोजगार हमी योजने अंतर्गत मजुरांना काम उपलब्ध करून देणे आवश्यक असताना गत चार वर्षे यंत्रणानी कुशल कामे करण्यावर स्वारस्य दाखविले. परिणामी या चार वर्षांत मजुरांना कामे मिळाली नाहीत. त्यामुळे मजुरांच्या सोई सवलतींवर खर्च झाला नाही. याबाबत समिती तीव्र नापसंती व्यक्त

करते व अशी शिफारस करते की, रोजगार हमी योजनेच्या उद्देशानुसार मजुरांना काम उपलब्ध करून देण्यासाठी सर्व यंत्रणानी मजुरांना कामे उपलब्ध करून द्यावे याबाबत केलेल्या कारवाईची माहिती समितीला तीन महिन्यांत सादर करावी.

**(४) मजुरांची नोंदणी :—**

समितीच्या जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेमधील "मजुरांची नोंदणी" यासंदर्भात समितीने प्रश्नावलीच्या माध्यमातून विचारणा केली की, जिल्ह्यात नोंदणी केलेल्या सर्व मजुरांना रोजगार पत्रिका (जॉबकार्ड) का देण्यात आले नाहीत? अद्याप किती मजुरांना रोजगार पत्रिका देणे शिल्लक आहे? याबाबत पुढीलप्रमाणे लेखी खुलासा करण्यात आला आहे :—

अमरावती जिल्ह्यातील २,८८,८९३ कुटुंबांची नोंदणी झालेली आहे. त्यापैकी २,८१,१०७ कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले आहे. त्या मधील एकूण मजूर संख्या ६,१३,१४३ एवढी आहे. प्रत्यक्षात सर्व कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले असून काही कुटुंबांचे जॉबकार्ड MIS वर प्रमाणित केले गेले नसल्यामुळे हा फरक दिसत आहे.

जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीने विचारणा केली की, सर्व मजुरांना जॉब कार्ड देण्यात आले आहे काय? जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी सांगितले की, सर्व मजुरांना जॉब कार्ड देण्यात आलेले नाही, परंतु ६.४८ लाख मजुरांची नोंदणी झाली आहे. त्यानंतर समितीने स्पष्ट केले की, ज्या मजुरांचा मृत्यू झालेला आहे त्यांच्या नावावर मजुरी देण्यात आली आहे अशी समितीकडे तक्रार आलेली आहे.

अचलपूर, कांडली या ठिकाणी ९ रोहयोच्या मृत व्यक्तींच्या नावावर पैसे घेण्यात आलेले आहेत. सदर ९ व्यक्ती ह्या मृत असून संरपच तसेच ग्रामविकास अधिकाऱ्यांनी त्यांना मृत प्रमाणपत्र देखील दिलेले आहे असे असतांना त्यांच्या नावावर पैसे घेण्यात आलेले आहे. मृत व्यक्तींच्या नावाने जॉबकार्ड सुद्धा दिलेले आहे. अचलपूर तालुक्यातील सिंधी बुद्रुक येथे सुद्धा ५ मृत मजुरांच्या नावाने मजुरी घेतली गेली आहे. यासंदर्भातील सविस्तर चौकशी करून १० दिवसांत समितीला अहवाल पाठविण्यात यावा असे समितीने स्पष्ट केले असता, याबाबत जिल्हाधिकाऱ्यानी होकारार्थ उत्तर दिले.

समितीने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली. जिल्हा बैठकीच्या वेळी दिलेल्या आश्वासनाच्या अनुषंगाने समितीने विचारणा केली की, जिल्ह्यात नोंदणी केलेल्या सर्व मजुरांना रोजगार पत्रिका (जॉबकार्ड) का देण्यात आले नाहीत? अद्याप किती मजुरांना रोजगार पत्रिका देणे शिल्लक आहे ? उप जिल्हाधिकारी (रोहयो) यांनी सांगितले की, अमरावती जिल्ह्यातील २,८८,८९३ कुटुंबांची नोंदणी झालेली आहे. त्यापैकी २,८१,१०७ कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले आहे. त्या मधील एकूण मजूर संख्या ६,१३,१४३ एवढी आहे. प्रत्यक्षात सर्व कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले असून काही कुटुंबांचे जॉबकार्ड MIS वर प्रमाणित केले गेले नसल्यामुळे हा फरक दिसत आहे. समितीने पुढे विचारणा केली की, अमरावती जिल्ह्यातील २,८८,८९३ कुटुंबांची नोंदणी झालेली आहे. त्यापैकी २,८१,१०७ कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आलेले आहेत. मग उर्वरित कुटुंबांना जॉबकार्डचे वाटप का करण्यात आले नाही? उप जिल्हाधिकारी (रोहयो) यांनी सांगितले की, सर्व कुटुंबांना जॉबकार्डचे वाटप करण्यात आले आहे. जॉबकार्ड मिळाले किंवा नाही हे व्हेरिफाय करावे लागते, त्यामुळे हा फरक दिसत आहे.

सन २००६ पासून ही योजना राबविण्यात येत आहे. थोडा वेळ लागेल, काही कामे झालेली आहेत, काही कामे अपूर्ण आहेत ती पूर्ण होण्यासाठी थोडा वेळ लागणार आहे, परंतु, मजुरांना जॉबकार्ड वाटप करण्याचे काम देखील वेळेवर पूर्ण होत नसेल तर, ही योजना राबविण्याचा उद्देश सफल होणार नाही असे समितीने स्पष्ट केले असता, जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी सांगितले की, ही सतत सुरू राहणारी प्रक्रिया आहे. जॉबकार्ड देण्यासंबंधीचे ठराविक उद्दिष्ट नसल्यामुळे यामध्ये ४ ते ५ टक्क्यांचा फरक दिसून येत आहे. समितीने विचारणा केली की, जॉबकार्ड देण्याची आकडेवारी प्रत्येक वर्षी बदलत असली तरी त्यामध्ये मोठ्या प्रमाणावर फरक पडू शकत नाही. एमआरईजीएस सुरू होऊन आता ७ वर्षे झालेली आहेत. मग या कालावधीत अमरावती जिल्ह्यातील २,८८,८९३ कुटुंबांची नोंदणी झाल्यानंतर त्यांना जॉबकार्डचे वाटप का करण्यात आले नाही? जिल्हाधिकारी,अमरावती यांनी सांगतले की, ही आकडेवारी पहिल्या वर्षातील नाही तर ही आता पर्यंतची आकडेवारी आहे. समितीने याबाबतचा वर्षनिहाय ब्रेकअप मागितला असता जिल्हाधिकारी,अमरावती यांनी सांगितले की, ७ हजार मजुरांची संगणकावर नोंद करावयाची राहून गेली आहे.

समितीला वर्षनिहाय ब्रेकअप देण्यात यावा. जर जॉबकार्डचे वाटप केले असेल तर, त्या बाबतची माहिती असायला पाहिजे होती. याबाबत फक्त एवढेच सांगावयाचे आहे की, एक वेळ कामावरील मजुरांची संख्या कमी जास्त होऊ शकते परंतु, नोंदणी केलेल्या मजुरांची संख्या कमी होऊ शकत नाही. जॉबकार्ड वाटपाचे काम पूर्ण झाले आहे का? अशी समितीने विचारणा केली असता, जिल्हाधिकारी,अमरावती यांनी सांगितले की, जॉबकार्ड वाटपाचे काम पूर्ण झालेले आहे. परंतु, ७ हजार मजुरांची संगणकावर नोंदणी करावयाची राहून गेली आहे. समितीला जॉबकार्ड वाटपाबाबतची वर्षनिहाय माहिती देण्यात यावी असे समितीने स्पष्ट केले असता, जिल्हाधिकारी,अमरावती यांनी सांगितले की, या बाबतची माहिती त्यांच्याकडे सद्यःस्थितीत उपलब्ध नाही.

समिती समोर साक्षीसाठी येताना संबंधित अधिकाऱ्यांनी अभ्यास करून आले पाहिजे. सन्माननीय सदस्य यांनी आतापर्यंत किती कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले, त्या बाबतची वर्षनिहाय माहिती विचारलेली आहे. संबंधित अधिकाऱ्यांना या प्रश्नाचे उत्तर देता आले पाहिजे. समितीने ज्यावेळी अमरावती जिल्ह्याला भेट दिली होती त्यावेळी जॉबकार्डचे वाटप झालेले नसल्याचे निदर्शनास आले होते. त्यावेळी या संदर्भात चर्चा देखील झाली होती. त्यामुळे सन्माननीय सदस्यांनी याबाबत प्रश्न उपस्थित केल्यानंतर संबंधित अधिकाऱ्यांना याबाबतचे उत्तर देता आले पाहिजे होते. संबंधित अधिकाऱ्यांनी उत्तर न दिल्यामुळे सन्माननीय सदस्यांनी त्रागा व्यक्त केला तर काय चुकीचे आहे? या संदर्भात संबंधित अधिकारी गंभीर नाहीत. सन्माननीय सदस्यांनी विचारलेल्या प्रश्नाबाबतची माहिती नसणे किंवा डेटा नसणे ही गंभीर बाब आहे. काही सुधारणा करता यावी, काही त्रुटी असल्यास त्या दूर व्हाव्यात, काही सूचना करता याव्यात, काही शिफारस करता यावी, यासाठी समिती संबंधित अधिकाऱ्यांची साक्ष घेते. परंतु, अभ्यास न करता, पूर्ण माहिती घेऊन न येता संबंधित अधिकाऱ्यांची केवळ वेळ मारून नेण्याची भूमिका असेल तर, या सर्व गोष्टींचा काय उपयोग आहे? असे समितीने स्पष्ट केले असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, जॉबकार्डचे वाटप करण्यात आले आहे. त्यामुळे या संदर्भात माहिती घेतलेली नाही.

सन्माननीय सदस्यांनी साक्ष घेताना प्रश्न विचारावयाचे नाहीत का, माहिती घ्यावयाची नाही का ? जिल्हा बैठकीच्या वेळी जे प्रश्न अनुत्तरित राहिलेले आहेत त्या संदर्भातच सन्माननीय सदस्य उप प्रश्न विचारत आहेत. सन्माननीय सदस्यांनी उपस्थित केलेल्या प्रश्नांना समाधानकारक उत्तर देणे हे त्यांचे कर्तव्य आहे. संबंधित अधिकारी समाधानकारक उत्तर देत नसतील तर मग हा मुद्दा सभागृहात उपस्थित करावयाचा काय? या बाबतची सविस्तर माहिती घेऊन ती समितीला सादर करण्यात यावी असे समितीने स्पष्ट केले असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, या बाबतची माहिती समितीला दोन दिवसांत सादर करतो. समितीने पुढे असे स्पष्ट केले की, या बाबतची सविस्तर माहिती समितीला एक आठवड्यात सादर करावी.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

अमरावती जिल्ह्यातील २,८८,८९३ कुटुंबांची नोंदणी झाली आहे. त्यापैकी २,८१,१०७ कुटुंबांना जॉबकार्ड देण्यात आले आहे. अद्याप जिल्ह्यातील ७ हजार मजुरांची संगणकावर नोंदणी करावयाची राहून गेलेली आहे. ही बाब योग्य नाही. याबाबत समिती तीव्र नाराजी व्यक्त करते व समिती अशी शिफारस करते की, मजुरांची संगणकावर नोंदणी करावयाचे शिल्लक राहिलेले काम विहीत कालमर्यादेत पूर्ण करण्यात यावे.

**(५) अपूर्ण कामे :—**

समितीच्या जिल्हा बैठकीच्या वेळी "अपूर्ण कामे" यासंदर्भात समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहितीच्या अनुषंगाने समितीने विचारणा केली की, यंत्रणानिहाय आढावा घेऊन सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर यांच्याकडील चांदूरबाजार कोडवर्धा नानोरी शेत रस्ता हे रस्त्याचे काम रोहयोमधून वगळण्यात आले असे नमूद करण्यात आले आहे. मूळ अंदाजपत्रक १२.२३ लाखांचे असताना १.८२ लाख रुपये खर्च झाला आहे. हे काम वगळण्याच्या निकषामध्ये बसत होते का? त्यावर कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, रोहयोमधून हा रस्ता वगळला आहे. १.८२ लाख रुपये खर्च झालेला असून ही रक्कम १४ ते १५ टक्के होते.

समितीने विचारणा केली की, १० टक्क्यांपेक्षा जास्त खर्च झाला असेल तर काम वगळता येते का? जागेची अडचण होती का? शेतकऱ्यांनी दानपत्र दिले होते का? काम पूर्ण करण्यासाठी पोलीस संरक्षण का मागितले नाही? दानपत्र दिल्यानंतर संपूर्ण जागा का मिळू शकत नाही? जून महिन्यात काम सुरू करू शकता का? डीपीडीसीमध्ये मागणी केली आहे का? यावर कार्यकारी अभियंता यानी सांगितले की, सन २००६ चे काम होते, त्यांच्याकडे प्रस्ताव आहे. मजूर मिळत नव्हते. २.५ कि.मी.चा रस्ता असून २ कि.मी.अंतराचे माती काम झालेले आहे. काही शेतकऱ्यांनी शेवटच्या टप्प्याकरिता जागा दिलेली नाही. २००६ मध्ये काम मंजूर झाले होते, २०११ मध्ये वगळण्यात आले. नव्याने प्रस्तावित करून आमदार निधीतून मागणी केली आहे. समितीने विचारणा केली की, कारला ते पिंपळखुटा शेत रस्ता हे काम का वगळण्यात आले? कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, १० वर्षापेक्षा जास्त कालावधी झालेला होता व काम अपूर्ण होते त्यामुळे वगळण्यात आले आहे.

समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, २३ लाखांचे मूळ बजेट असतांना ५.०९ लाख रुपये खर्च झालेला आहे. खर्चाचे प्रमाण बजेटच्या मानाने २८ टक्के आहे. १० टक्क्यांपेक्षा जास्त खर्च झाला असेल तर काम वगळता येत नाही. अडगाव राहणखेडा रस्त्याचे मूळ अंदाजपत्रक १७.३९ लाख असताना १३.४७ लाख रुपये खर्च झालेला आहे. हे प्रमाण ७५ टक्के असून हे काम मग्रारोहयो अंतर्गत वर्ग केले आहे. विचोरी दाभेरी रस्त्याचे मूळ अंदाजपत्रक १५.८५ लाख होते व ६.१३ लाख खर्च झालेला असताना काम वगळण्यात आले आहे. उदखेड ते अंबाडा शेत रस्त्याचे मूळ अंदाजपत्रक १९.४७ लाख होते व १२.४४ लाख रुपये खर्च झालेला आहे असे असताना ही सर्व कामे कशी वगळण्यात आली. यावर उप आयुक्त (रोहयो), यांनी सांगितले की, निलंबन निधी असेल तर आयुक्तांची परवानगी घेतली जाते. १० टक्क्यांपेक्षा कमी किंवा ९० टक्क्यांपेक्षा जास्त खर्च झाला असेल तर जिल्हाधिकाऱ्यांना काम वगळण्याचा अधिकार आहे. परिस्थितीनुसार जिल्हाधिकारी निर्णय घेऊ शकतात.

सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती यांच्याकडील ही चार ही कामे वगळण्याबाबतचे स्पष्टीकरण समितीला सादर करावे. १० टक्क्यांपेक्षा जास्त ते ७५ टक्क्यापर्यंत खर्च झाला असताना कामे कोणाची अनुमती घेऊन वगळण्यात आली? या कामावर जो काही निधी खर्च झाला त्याची जबाबदारी कोणाची याबाबत समितीला स्पष्टीकरण सादर करावे असे समितीने स्पष्ट केले असता, उप आयुक्त (रोहयो) यांनी सांगितले की, ९० टक्यांपेक्षा जास्त खर्च झाला असेल तर जिल्हाधिकारी काम वगळू शकतात. कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, खेड, रायपूर शेत रस्ता या कामाचे मूळ अंदाजपत्रक ८.७१ लाखाचे होते व ४.३९ लाख खर्च झाला आहे. हे काम वगळले असून मागील वर्षी डीपीडीसीमध्ये प्रस्तावित केले होते. यावर्षी ८ पैकी हे एक काम अपूर्ण असून ७ उर्वरित कामे पूर्ण झाली आहेत. यासंदर्भात विभागीय अधिकारी यांनी सांगितले की, जुन्या रोजगार हमी योजनेमधील अनेक कामे वर्षानुवर्षे अपूर्ण होती. यावर अन्य उपाययोजना करता याव्यात. यादृष्टीने जिल्हा स्तरावर बैठक निश्चित करण्यात आली. बैठक घेऊन दिनांक १५ सप्टेंबर २०११ रोजी जुन्या रोजगार हमी योजनेतील कामे वगळण्याबाबत जीआर काढण्यात आला. १० टक्क्याच्या आत व ९० टक्क्यापेक्षा जास्त खर्च झालेली कामे वगळण्याबाबत जिल्हाधिकारी यांना अधिकार देण्यात आले आहेत. निलंबन निधी असेल तर विभागीय आयुक्तांना अधिकार देण्यात आले आहेत. १० टक्के रक्कम आजच्या दराने निश्चित करावयाची आहे. आजच्या डीएसआर रेटमधील वाढ लक्षात घेता १० टक्के रक्कम येत असेल तर काम वगळण्याचे अधिकार जिल्हाधिकाऱ्यांना आहेत.

समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, जिल्हा परिषदेतील १ ते ५ वर्षे अपूर्ण असलेल्या कामाची सद्यःस्थिती काय आहे? कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद यानी सांगितले की, चांदुरी ते कवळा बहाळे ४.०० कि.मी. चा रस्ता अमरावती तालुक्यातील आहे. सदरहू काम अर्थसंकल्पातून घेण्याचे प्रस्तावित करण्यात आले. सदरहू काम रोहयोतून वगळण्यात आले आहे. दारापूर ते चंडीकापूर शेत रस्ता २.०० कि.मी.चा असून दर्यापूर तालुक्यातील आहे. या रस्त्याचे मातीकाम पूर्ण झाले आहे. १२०० मीटरचे काम राहिले होते. हे काम जुने असल्यामुळे रोहयोतून वगळले आहे. हे काम अर्थसंकल्पातून घेण्याचे प्रस्तावित आहेत. कांडली अंतर्गत रस्ता २.०० कि.मी.चा असून अचलपूर तालुक्यातील आहे. सदरहू रस्त्याचे काम ग्रामपंचायतीमार्फत पूर्ण करण्यात आले आहे.

चांदूरी ते कवळा बहाळे रस्ता व दारापूर ते चंडीकापूर शेतरस्ता ही कामे रोहयोतून वगळण्यात आली आहेत. सदर कामे कोणत्या अर्थसंकल्पातून घेण्याचे प्रस्तावित केले आहे?असे समितीने विचारले असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी यानी सांगितले की, ही कामे सन २०१२-२०१३ च्या अर्थसंकल्पातून घेण्यात आले आहे. जो निधी आला होता त्यामध्ये हे काम बसत नव्हते. त्यामुळे काही कामे एमआरईजीएस मधून पूर्ण केली आहेत.

मजुरांना काम मिळाले पाहिजे. त्यातून चांगली शासकीय मालमत्ता निर्माण झाली पाहिजे. शासकीय निधी वाया घालवू नये. रस्त्याची कामे रोहयोतून वगळली आहेत. अशा कामांची पूर्तता करताना दुसऱ्या विभागाने आर्थिक तरतूद करून ते काम पूर्ण करणे गरजेचे आहे, असे समितीने स्पष्ट करून सूचना केली की, डीपीसीच्या फंडातून काम घ्यावे व ते पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करावा.

समितीने विचारणा केली की, धामणगाव ते लाडकी शेत रस्त्याचे काम स्थानिक विकास निधीतून केलेले आहे. सदरहू काम देखील रोहयोतून वगळले आहे. पाडी पिंपळखुटा रस्त्याची सद्यःस्थिती काय आहे ? यावर कार्यकारी अभियंता,जिल्हा परिषद,अमरावती यानी सांगितले की, या कामाचे मूळ अंदाजपत्रक रूपये १५.९१ लाखाचे होते. या कामावर आता पर्यंत रुपये १३.७९ लाख इतका निधी खर्च झाला आहे. या रस्त्याचे माती काम पूर्ण झालेले असून कुशल काम पूर्ण झालेले नाही.

समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, सदर काम पूर्ण करायला पाहिजे होते. अर्थसंकल्पातून दोन ते अडीच लाख रूपये देता येतील काय हे पहावे.जिल्हा परिषदेकडे निधी नसतो म्हणून असे सांगण्यात येत आहे. नांदगाव पेठ ते शेवडी रस्त्याच्या कामाची सद्यःस्थिती काय आहे? सदर रस्त्याचे काम कशा प्रकारे पूर्ण करण्यात येणार आहे? या कामावर रुपये ५.४० लाख कशावर खर्च केले आहेत? यात शेतकऱ्यांची जमीन देखील गेली आहे. शेवटच्या टप्प्यावर आलेले काम कसे काय वगळण्यात आले ? यावर मुख्य कार्यकारी अधिकारी यानी सांगितले की, हे काम पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करण्यात येईल. डीपीडीसीचा निधी जिल्हा परिषदेसाठी ठेवला जातो. त्यातून हे काम पूर्ण करता येते किंवा नाही हे तपासून सदर काम पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करण्यात येईल. सुरूवातीला हे काम रोजगार हमी योजनेमधून हाती घेतले होते. आता हे काम एमआरईजीएसमधून पूर्ण करण्यात येईल. हे काम पुन्हा इजीएसमधून घेता येत नाही. सदरहू काम एमआरईजीएस मधून कसे पूर्ण करता येईल यासाठी प्रयत्न करण्यात येत आहे. जुलै अखेर पर्यंत कुशलचे काम पूर्ण करण्यात येईल. नोव्हेंबर नंतर काम करायला सुरूवात करण्यात येईल. साधारणतः डिसेंबर अखेर पर्यंत काम पूर्ण करण्यात येईल.

आसरा ते बपोरी शेत रस्ता, तालुका भातकुली या रस्त्याच्या कामाची सद्यःस्थिती काय आहे?तसेच मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी अधिकाऱ्यांशी किती वेळा चर्चा केली आहे? असे समितीने विचारले असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती यांनी सांगितले की, हा रस्ता २.५० कि.मी.चा असून या कामावर रुपये २.४२ लाख इतका निधी खर्च झाला आहे. पुस्तकामध्ये रुपये ६.१५ लाख खर्च हा चुकून दाखविला गेला आहे. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती यांनी एमआरइजीएसच्या कामासंबंधी अधिकाऱ्याची आढावा बैठक घेऊन चर्चा केलेली आहे.

अपूर्ण कामाला न्याय कसा देता येईल हे पहावे. रोहयोतून काम वगळले तरी ते काम दुसऱ्या विभागातून पूर्ण करण्यासाठी कोणत्याही प्रकारचे प्रयत्न होताना दिसत नाही. रोहयोतून काम वगळल्या नंतर ते पूर्ण झाले पाहिजे. काही गोष्टींकडे जास्त लक्ष दिले पाहिजे. एक म्हणजे अपूर्ण कामे पूर्ण करण्यासाठी काही गोष्टी कराव्या लागतील. ही अपूर्ण कामे पूर्ण कशा प्रकारे करता येतील हे यंत्रणेने पाहणे आवश्यक आहे. यासाठी प्रत्येक यंत्रणेने प्रत्येक स्तरावर पाठपुरावा केला पाहिजे, असे समितीने स्पष्ट केले असता, उप आयुक्त, रोहयो यानी सांगितले की, यासंबंधी आयुक्त महोदयांनी बैठक घेतली होती. रोजगार हमी योजनेतून कामे वगळण्यासंबंधीचे जे निकष आहेत. त्याचे पालन केले पाहिजे अशा सूचना देखील त्यांनी दिल्या होत्या. यंत्रणेची खात्री झाल्यानंतरच जिल्हाधिकारी काम वगळण्याची प्रक्रिया करतात. यंत्रणेने जबाबदारी घेतली असेल तर ते काम पूर्ण करायला पाहिजे.

शिरजगाव कोरडे ते अमदुरी रस्ता या कामाची सद्यःस्थिती काय आहे? हे काम बंद करण्याचे कारण काय आहे? असे समितीने विचारले असता, कार्यकारी अभियंता यानी सांगितले की, सदरील रस्ता ३.४३ कि.मी. लांबीचा होता. या कामाचे मुळ अंदाजपत्रक रूपये ३५.८९ लाख होते. मजूर उपलब्ध नसल्यामुळे सदर काम एमआरईजीएस मधून घेण्यात आले. अडीच कि.मी. लांबीचे मातीकाम झालेले आहे. समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, दोन कि.मी. लांबीचे काम केले असून आता पर्यंत रुपये ५८ हजार खर्च केले आहे. हे कसे काय शक्य आहे? यावर कार्यकारी अभियंता यानी सांगितले की, सदर काम रोहयोतून वगळले होते. रोहयो अंतर्गत या कामावर रुपये ५८ हजार इतका खर्च झालेला आहे. आता पर्यत या कामावर रुपये १४.०१ लाख इतका खर्च झाला आहे. सदर काम एमआरइजीएस मधून झाले आहे. हा रस्ता जास्त लांबीचा होता. २.५ कि.मी. लांबीचे माती काम झाले आहे. समितीला तर्कसंगत उतरे देणे अभिप्रेत आहे. मूळ अंदाजपत्रक ३५.८९ लाख रूपयांचे आहे. आतापर्यंत कामावर ०.५८ टक्के खर्च झाला असून, १४.०१ लक्ष खर्च अकुशल कामावर झाला आहे असे देण्यात आलेले उत्तर योग्य नाही असे समितीने स्पष्ट केले असता, कार्यकारी अभियंता यांनी अशी माहिती दिली की, रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून या कामावर ०.५८ टक्के खर्च झाला असून नंतर हे काम वगळण्यात आले आहे. त्यानंतर हे काम एमआरईजीएसच्या माध्यमातून घेण्यात आले व त्यावर १४ लक्ष रुपये खर्च झाले आहे. सद्या हे काम प्रगतीपथावर आहे. अकुशल काम पूर्ण झालेले आहे.

समितीला या ठिकाणी जी काही माहिती देण्यात येत आहे त्याचा समिती निषेध व्यक्त करते. जी माहिती दिली ती ऐकून वाईट वाटले. आदरणीय श्री. वि.स.पागे यांनी रोजगार हमी योजना सन १९७२ साली सुरू केली. उत्तरे देताना आकडेवारी २/४ टक्के इकडे तिकडे झाली तर त्याचे काही वाटत नाही परंतु या ठिकाणी भलतेच उत्तर दिले जात आहे. सन १९७२ च्या दुष्काळात रोजगार हमी योजनेचा फायदा राज्यातील करोडो मजुरांना झाला होता. महाराष्ट्र राज्यात रोजगार हमी योजना चांगल्या प्रकारे राबविल्या गेल्यामुळे ही योजना संपूर्ण देशात सुरू करण्यात आली. महाराष्ट्र राज्याला अभिमान वाटवा अशी ही योजना आहे. १९७२ च्या दुष्काळात रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून मोठ्या प्रमाणात सुकडी वाटली गेली होती. खरे म्हणजे रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून अनेक तरुणांना एक दिशा मिळाली होती. परंतु आता रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून पैसे खाण्याचे काम सुरू झाल्यामुळे रोजगार हमी योजनेचा बट्ट्याबोळ झाला आहे. देशातील इतर राज्यांमध्ये ही योजना चांगल्या प्रकारे राबवली जात आहे परंतु आता हीच योजना आपल्या राज्यामध्ये चांगल्या प्रकारे राबवली जात नाही याची खंत आहे. रोजगार हमी योजनेच्या माध्यमातून जो काही खर्च झालेला आहे त्यामुळे समितीचे समाधान झालेले नाही.

समितीने दौऱ्याच्या वेळी अमरावती जिल्हयातील तीन तालुक्यांना भेटी दिल्या. परंतु सर्व कामांमध्ये समितीला सामाजिक वनीकरणाचे केवळ एकच काम चांगले आढळून आले. समितीने जी काही कामे पाहिली त्यासंदर्भात समितीने शासनाला काय शिफारस करावयाची हा समितीसमोर प्रश्न पडला आहे. आजच्या बैठकीसाठी जवळपास १२/१४ आमदार आपापल्या मतदार संघातून कामे सोडून येथे आली आहेत. समितीचे सदस्य हे लोकप्रतिनिधी असून तुम्ही प्रशासन आहात. काम कसे करावयाचे हे आपल्या हातात असते. काही जिल्ह्यांमध्ये रोजगार हमी योजनेची कामे चांगल्या प्रकारे सुरू आहेत. समितीला या ठिकाणी विदारक चित्र दिसून आलेले आहे. या ठिकाणी कोणत्याही योजनेचे काम चांगले आढळून आलेले नाही. त्यामुळे योग्य ती कारवाई होणारच आहे असे समितीने स्पष्ट केले.

समितीने विचारणा केली की, गावतलाव, कसबेगव्हाण, ता.दर्यापूर, एकताई लघू पाटबंधारे योजना, ता. चिखलदरा व कामीदा मारीता रस्ता (भाग-२) या अपूर्ण कामांची माहिती समितीला देण्यात यावी. त्यावर जिल्हाधिकारी, अमरावती यांनी अशी माहिती दिली की, गावतलाव, कसबेगव्हाण, तालुका दर्यापूरचे मूळ अंदाजपत्रकानुसार किंमत २४.९३ होती. या कामाला तांत्रिक मान्यता दिनांक १५ एप्रिल,२००४ रोजी मिळाली होती व प्रशासकीय मान्यता दिनांक १८ जून,२००४ रोजी मिळाली होती. या कामावर आतापर्यंत १.५१ लक्ष खर्च झालेला असून दिनांक १४ सप्टेंबर,२०१२ अन्वये निर्लेखन अहवाल उपायुक्त, रोहयो यांच्याकडे देण्यात आला असून त्रुटींची पूर्तता करण्याकरिता निर्लेखन प्रस्ताव संबंधित यंत्रणेकडे पाठविण्यात आला आहे.

एकताई लघु पाटबंधारे योजना, तालुका चिखलदराचे मूळ अंदाजपत्रकानुसार कामाची किंमत ४.७४ लक्ष होती, तांत्रिक मान्यता दिनांक १० जानेवारी, १९७९ रोजी व प्रशासकीय मान्यता दिनांक १७ जानेवारी १९७९ रोजी मिळाली होती. दिनांक १२ जून,२००९ रोजी कामास सुरूवात करण्यात आली होती. सदरहू काम दिनांक १० जानेवारी १९८५ रोजी बंद झाले. सदरहू काम वनजमिनीअभावी बंद पडले. सुधारित अंदाजपत्रक

शासनाकडे सादर करण्यात आले आहे. एन.पी.ची रक्कम न भरल्यामुळे प्रस्ताव रद्द करण्यात आला आहे. दिनांक २५ फेब्रुवारी २०११ अन्वये सदरहू काम रोहयोतून वगळण्यात आले.

कामीदा मारीता रस्ता (भाग-२) या रस्त्याची मूळ अंदाजपत्रकानुसार किंमत १७.३२ लक्ष रुपये होती. रस्त्याला तांत्रिक मान्यता दिनांक १३ जानेवारी २००३ रोजी मिळाली होती व प्रशासकीय मान्यता दिनांक १७ फेब्रुवारी २००३ रोजी मिळाली होती. रस्त्याच्या कामाला माहे डिसेंबर, २००५ रोजी सुरूवात झाली होती व रस्त्याचे काम माहे मार्च २००६ रोजी बंद पडले. रस्त्यावर आतापर्यंत १,२२,०९७ एवढी रक्कम खर्च झाली असून आता या रस्त्याचे काम पंतप्रधान ग्रामसडक योजनेतून झाले असून कार्यालयास प्रस्ताव सादर करण्यात आला आहे.या रस्त्याचे एकंदर चार भागाचे अंदाजपत्रक तयार करण्यात आले होते. त्यातील एका भागाचे काम पूर्ण झाले आहे. परंतु बाकीच्या तीन भागाचे काम जुन्या दराने करण्यास ठेकेदार पुढे येत नाही अशी वस्तुस्थिती आहे.

अमरावती जिल्ह्यातील १४ तालुक्यांपैकी चिखलदरा व धारणी येथे मजूर मिळतात. मग्रारोहयो गरीब मजुरांच्या हाताला काम देण्यासाठी सुरू केली आहे. विधानसभेत सिपना वन्यजीव विभागाच्या संदर्भात तारांकित प्रश्न मांडला होता. मजूर उपस्थित असूनही मजूर न वापरता चौराकंड परिक्षेत्रात अतिसंरक्षित भागात मशिनरी वापरुन कामे केली गेली. या संदर्भात जो अहवाल सादर करण्यात आला त्यानुसार श्री.धोटे नावाच्या अधिकाऱ्यावर कारवाई केली गेली. इतर दोन संबंधित अधिकारी श्री.बडगे हे सध्या वर्धा येथे डीएफओ म्हणून कार्यरत आहेत व श्री.नेर्लेकर यांची बीड येथे बदली झाली होती, ते निवृत्त झाले आहेत. अश्वमेघ नावाच्या कंपनीकडून कामे करून घेण्यात आली. धारणी तालुक्यामध्ये जी कामे केली गेली त्याची यादी समितीकडे उपलब्ध आहे. (१) परसोडी पोचमार्ग, (२) मोगदी ते टिटंबा पोचमार्ग , (३) राजपूर ते गोंडवाडी गौलाडे, (४) बेरदा बलडा ते झाफळ, (५) बेरदा बलडा ते बारु, जिल्हा परिषद बांधकाम विभागाचे कामे (१) दाबिदा ते सालई, (२) दाबिदा ते अंबाडी पोचमार्ग ही सर्व कामे मजूर उपलब्ध असूनही मशिनरीचा वापर करून पूर्ण करण्यात आली. आजही त्या ठिकाणी मजुरांशिवाय कामे सुरू आहेत. कॉन्ट्रॅक्टरला कामे देऊन मशिनरीमार्फत कामे केली जातात. स्थानिक पंचायत समिती व जिल्हा परिषदेच्या लोकप्रतिनिधींनी ही यादी दिली आहे. कामे करण्यापूर्वी त्यांना विश्वासात घेतले जात नाही. या सर्व कामांची चौकशी झाली पाहिजे. अश्वमेघ कंपनीला ब्लॅकलिस्ट केले पाहिजे. श्री. बडगे आणि श्री. नेर्लेकर यांच्यावर कारवाई झाली पाहिजे. समितीने जो मुद्दा उपस्थित केला आहे त्या संदर्भातील कागदपत्रे जिल्हाधिकारी यांनी तपासून घ्यावीत आणि समितीला वस्तुस्थितीदर्शक माहिती सादर करावी. तसेच गावतलाव, खिडकी कलम हे काम बंद होण्याची कारणे काय आहेत ? मूळ अंदाजपत्रक रुपये १.३२ लाख असताना रुपये १.८३ लाख खर्च झाला आहे. अतिरिक्त खर्चाची तरतूद कुठून केली ? हे काम वगळले आहे अशी समितीने विचारणा केली असता, कार्यकारी अभियंता, पाटबंधारे विभाग, जिल्हा परिषद यांनी सांगितले की, छपाईमध्ये चूक झाली आहे. खर्च रुपये १.८३ लाख नसून ०.८३ हजार एवढा खर्च झालेला आहे. समितीने पुढे विचारणा केली की, उपराई गाव तलाव पूर्णा नदीच्या निळ्या पट्ट्यात येत असल्यामुळे बंद केले असे म्हटले आहे. मग रक्कम खर्च कशी झाली? यावर कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, सन १९८७ ला काम सुरू झाले होते व सन १९९१ पर्यंत खर्च झाला. सन १९९१ मध्ये लक्षात आले की, काम पूर्णा नदीच्या निळ्या पट्टयात येत आहे. अधिकचा खर्च वसूल केला आहे. रोहयोमधून हा खर्च झाला होता. समितीने विचारणा केली की, गावतलाव नरदोडा क्र.२ या कामावर १.८३ लाख रुपये कशाकरिता खर्च झाला? मूळ किंमत १.०४ लाख रुपये होती. मजूराअभावी काम वगळले असे म्हटले आहे.

कार्यकारी अभियंता यांनी सांगितले की, १.०४ लाखापैकी ८० हजार रुपये खर्च झालेला आहे. जमिनीचा ॲवार्ड झाला आहे. परंतु शेतकरी जमीन द्यायला तयार नाही. त्यांनी न्यायालयात दावा दाखल केला असून न्यायालयाने स्थगिती दिला आहे. त्यामुळे काम वगळले आहे. त्यावर समितीने स्पष्ट केले की, अधिकाऱ्यांनी लोकप्रतिनिधींना विश्वासात घेतले, त्यांच्यासमवेत बैठक घेतली तर अवश्य सहकार्य मिळेल. परंतु अधिकाऱ्यांकडून याबाबत पुढाकार घेतला जात नाही. एकत्र येऊन कामे केली तर चांगले यश मिळू शकते. लोकप्रतिनिधी या नात्याने अधिकारी आणि जनता यांच्यामध्ये दुवा साधण्याचा प्रयत्न करीत आहेत.

५ ते १० वर्षापर्यंत जी अपूर्ण कामे आहेत त्याबाबत समजू शकतो, परंतु २० ते २५ वर्षापर्यंत कामे अपूर्ण आहेत अशी कामे बाजूला सारणे वा अभिलेख्यांवरून बाजूला घ्या अशी सूचना समितीला करू शकता का? एखाद्या कामावर सन १९८७ मध्ये ८० हजार रुपयाचे माती काम केले असेल तर त्या कामाची आज काय अवस्था असेल ? अशी कामे अभिलेख्यांवरुन बाजूला का करू नयेत ? आयुक्त स्तरावरून समितीला अशा कामांबाबत सूचना करता येईल का ? असे समितीने पुढे स्पष्ट केले असता उपायुक्त, रोहयो यांनी सांगितले की, विभागीय आयुक्त कार्यालय व जिल्हाधिकारी कार्यालय या यंत्रणेच्या माध्यमातून अवश्य पर्याय सुचविण्यात येईल. तांत्रिक बाबी असल्यामुळे यंत्रणांशी विचारविनिमय करावा लागेल. गाव तलावाची साईट असेल तर पाण्याची साठवण झाली पाहिजे.

समितीच्या बैठकीमध्ये याबाबतचा निर्णय घेऊन शासनाला शिफारस करण्यात येईल. गावतलाव दाभाडा, ता.धामणगाव या कामाचे मूळ अंदाजपत्रक रुपये२.९६ लाखाचे होते व आतापर्यंत खर्च रुपये ९.३१ लाख होऊनही काम अपूर्ण आहे. काम वगळण्यासाठी प्रस्तावित केले आहे. हे काम वगळण्याची कारणे काय आहेत ? मूळ अंदाजपत्रक रुपये २.९६ लाखाचे असताना ९.३१ लाख रुपये एवढा वाढीव खर्च कसा झाला ?

कार्यकारी अभियंता (उर्ध्व वर्धा कालवे विभाग क्र.३), यानी सांगितले की, हे काम दिनांक १७ जून १९८९ ला सुरू झाले होते, या कामाची घळभरणी झालेली होती. या कामावर ९.३१ लाख रुपये खर्च झाला आहे. मध्यंतरी पूर आल्यामुळे तलाव फुटला आणि अद्यापर्यंत त्याची दुरुस्ती झाली नाही. या कामाबाबत चौकशी नेमण्यात आली होती. चौकशीचा अहवाल सादर झालेला आहे. या ठिकाणी तलाव बांधणे योग्य नाही असे प्रस्तावित केले आहे.वाढीव खर्चासाठी सुधारित अंदाजपत्रक तयार केले होते.

जिल्हा बैठकीच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली त्यावेळी समितीला दिलेल्या लेखी माहितीच्या अनुषंगाने समितीने विचारणा केली की, कारला ते पिंपळखुटा शेतरस्ता, अडगांव रोहनखेडा रस्ता, विचोरी दाभेरी रस्ता व उद्खेड ते अंबाडा शेतरस्ता या रस्त्यांची कामे रोहयोतून वगळण्यात आली असल्याने त्या रस्त्यांच्या कामाच्या सद्यःस्थितीबाबतची सविस्तर माहिती समितीला देण्यात यावी. कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी अशी माहिती दिली की, कारला ते पिंपळखुटा हा ३.३ कि.मी. लांबीचा शेत रस्ता आहे. त्यापैकी ८६० मीटर लांबीचा रस्ता वन विभागाच्या जमिनीवरुन जातो. या ८६० मीटर लांबीच्या रस्त्यावर मुरुम टाकून अस्तरीकरण करावयाचे होते. परंतु वन विभागाने उत्खनन करण्यास परवानगी दिलेली नसल्यामुळे ८६० मीटर रस्त्याचे काम अपूर्ण आहे. उर्वरित रस्त्याचे काम पूर्ण झालेले आहे. त्यावर समितीने विचारणा केली की, या कामाचे एस्टिमेट तयार करताना ८६० मीटर लांबीचा रस्ता वन विभागातून जातो याची माहिती नव्हती काय आणि माहिती असेल तर वन विभागाची परवानगी न घेता एस्टिमेट का तयार करण्यात आले? वन विभागाची पूर्व परवानगी घेऊनच एस्टिमेट तयार करावयास पाहिजे होते. कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, वन विभागाकडे परवानगी मागितली होती. परंतु वन विभागाने उत्खनन करण्यास परवानगी दिलेली नाही. कुशल कामाकरिता ३ वेळा टेंडर काढल्यानंतर देखील त्याला प्रतिसाद मिळालेला नाही. त्यामुळे अकुशल मधून हे काम करण्यासाठी परवानगी मागण्यात येत आहे. समितीने पुढे स्पष्ट केले की, वन विभागाने अट घालून परवानगी दिली आहे. त्यावर कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग,अमरावती यांनी होकारार्थ उत्तर दिले व स्पष्ट केले की, तेथे उत्खनन करता येत नाही. तसेच, अडगांव ते रोहणखेडा रस्त्याचे काम एमआरईजीएस मधून पूर्ण करण्यात आले आहे. विचोरी-दाभेरी रस्त्याच्या माती कामाच्या पूर्ण निविदेस प्रतिसाद नसल्याने सदर काम रोहयोतून वगळून उर्वरित कामांचे अंदाजपत्रक खनिकर्म विभागाकडे सादर केले आहे. उद्खेड-अंबाडा रस्त्याचे काम सन २०१३-२०१४ मध्ये डीपीडीसी मधून मंजूर करण्यात आले असून हे काम सुरू झाले आहे.

जिल्हा परिषद, बांधकाम विभाग, अमरावती अंतर्गत चांदुरी ते कवठा बहाळे रस्ता व दारापूर ते चंडीकापूर शेतरस्त्याच्या अपूर्ण असलेल्या कामांसाठी कोणत्या अर्थसंकल्पातून निधी उपलब्ध झाला? कामाची सद्यःस्थिती काय आहे? अशी समितीने विचारणा केली असता, कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद, बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी अशी माहिती दिली की, चांदुरी ते कवठा बहाळे या ४ कि.मी. लांबीच्या रस्त्याच्या कामास जिल्हाधिकारी, अमरावती यांच्या दिनांक ४ नोव्हेंबर २००५ च्या पत्रान्वये प्रशासकीय मान्यता मिळाली होती. दिनांक २० जून २००६ पर्यंत या कामाच्या अकुशल भागाचे २ कि.मी. लांबीचे माती काम पूर्ण करण्यात आले असून अकुशल भागावर २.४९ लक्ष रुपये खर्च झालेला आहे. पुढील काम करण्यास मजूर उपलब्ध न झाल्यामुळे हे काम पूर्ण झालेले नाही. तसेच, दारापूर ते चंडीकापूर शेत रस्त्याची लांबी २ कि.मी आहे. जिल्हाधिकारी, अमरावती यांच्या दिनांक ३० जून २००५ च्या पत्रान्वये या रस्त्याच्या ४.८९ लक्ष रुपये किंमतीच्या कामास प्रशासकीय मान्यता मिळालेली होती. त्यातील अकुशल कामास दिनांक २५ एप्रिल २००६ रोजी सुरूवात करण्यात आली होती. दिनांक ३० मार्च २००७ पर्यंत या रस्त्याचे ४०० मीटर लांबीचे मातीकाम करण्यात आले असून त्यावर ७१ हजार रुपये खर्च झालेले आहेत. त्यानंतर पुढील काम करण्यास मजूर उपलब्ध झाले नाहीत. त्यामुळे वरील दोन्ही कामे दिनांक २ फेब्रुवारी २०११ रोजी रोजगार हमी योजनेतून वगळण्यात आलेली आहेत. त्यानंतर ही कामे जिल्हा वार्षिक योजनेतून घेण्याचे प्रस्तावित करण्यात आले होते. परंतु अंतिम नियोजनामध्ये या कामांना मंजूरीमिळालेली नाही. आता सन २०१४-२०१५ मध्ये ही कामे फेरप्रस्तावित करून पूर्ण करण्याचा प्रयत्न करण्यात येईल.

समितीने पुढे विचारणा केली की, कारला ते पिंपळखुटा शेतरस्ता, अडगाव रोहनखेडा रस्ता, विचोरी दाभेरी रस्ता व उदखेडा ते अंबाडा शेतरस्ता या रस्त्यांची कामे रोहयोतून वगळण्यात आली असल्याने त्या रस्त्यांच्या कामांची सद्यःस्थिती काय आहे? ती कामे पूर्ण झालेली आहेत काय? तसेच रोजगार हमी योजनेतून अकुशल कामे केली आहेत. कुशल कामे बाकी आहेत. त्यावर कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, अडगांव ते रोहणखेडा रस्त्याचे काम एमआरईजीएस मधून पूर्ण करण्यात आले आहे. विचोरी-दाभेरी रस्त्याच्या कामाच्या निविदेस प्रतिसाद न मिळाल्यामुळे सदरहू काम रोहयोतून वगळून उर्वरित कामांचे अंदाजपत्रक तयार करून ते खनिकर्म विभागाकडे सादर करण्यात आले आहे. तसेच, उद्खेड-अंबाडा रस्त्याचे काम सन २०१३-२०१४ मध्ये डीपीडीसी मधून मंजूर करण्यात आले असून या कामास सुरूवात झाली आहे.

विभागीय सचिवांनी सांगितले की, सन २००६ ची परिस्थिती सांगावयाची झाली तर काही कामे रोजगार हमी योजनेतून करणे प्रॅक्टिकली शक्य नसल्यामुळे ती कामे रोजगार हमी योजनेतून वगळण्यात आली आहेत तर काही कामे इतर विभागांकडे हस्तांतरित करण्यात आली आहेत. त्यासंदर्भात समितीने स्पष्ट केले की, असे जरी असले तरी फार कमी प्रमाणावर कुशल कामे पूर्ण केलेली आहेत.

जिल्ह्यातील रोहयोच्या माध्यमातून घेण्यात आलेली परंतु, अपूर्ण राहिल्याने वगळण्यात आलेली रस्त्यांची कामे पूर्ण करण्यासाठी संबंधित यंत्रणेच्या अधिकाऱ्यांनी कोणते प्रयत्न केले व त्यांची सद्य:स्थिती काय आहे ? असे समितीने विचारले असता कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, जिल्हाधिकारी, अमरावती यांच्या आदेशानुसार अपूर्ण असलेली ३१ कामे रोजगार हमी योजनेतून वगळण्यात आलेली आहेत. त्यापैकी १८ रस्त्यांच्या कामांना ग्रामीण रस्त्याचा दर्जा प्राप्त झालेला आहे व १२ कामे अवर्गीकृत आहेत. पार्डी ते पिंपळखुटा या रस्त्याचे काम दर्जोन्नत झाल्याने ते सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडे हस्तांतरित करण्यात आलेले आहे. चिखली वैद्य ते पिंपरी (कलगा) हे काम सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडे हस्तांतरित करण्यात आले होते. सार्वजनिक बांधकाम विभागाने हे काम पूर्ण केलेले आहे. पारडी-पिंपळखुटा रस्ता दर्जोन्नत झालेला आहे. शासनाच्या धोरणानुसार सर्व प्रमुख जिल्हा मार्गांची लांबी सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडे हस्तांतरीत करण्यात आली आहे.

त्यावर समितीने विचारणा केली की, उर्वरित रस्त्यांच्या कामाची सद्य:स्थिती काय आहे? यासंदर्भात कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद बांधकाम विभाग, यांनी सांगितले की, १२ अवर्गीकृत कामांपैकी धामणगाव-लाडकी रस्त्याचे काम स्थानिक विकास निधीतून पूर्ण करण्यात आले आहे. बासलापूर-तरोडा हे काम पारधी वस्ती विकास योजनेतून मंजूर असून ते प्रगतीपथावर आहे. उर्वरित १० कामे अवर्गीकृत असल्याने ती डीपीडीसी मधून प्रस्तावित करता येत नाहीत. ती कामे इतर योजनांमध्ये प्रस्तावित करून पूर्ण करण्याचे नियोजन आहे.

अपूर्ण कामांच्या माहितीमध्ये १९ रस्त्याच्या कामांना ग्रामीण रस्त्यांचा दर्जाच्या उल्लेख केलेला आहे असे समितीने विचारले असता, कार्यकारी अभियंता,जिल्हा परिषद,सार्वजनिक बांधकाम विभाग यांनी सांगितले की, १८ रस्त्यांच्या कामांना ग्रामीण रस्त्याचा दर्जा प्राप्त झालेला आहे. समितीने पुढे असे विचारले की, १९ रस्त्यांची कामे वर्गिकृत आहेत आणि १२ रस्त्यांची कामे अवर्गिकृत आहेत. रस्ते विकास योजना सन २००१-२०२१ च्या नियोजनामध्ये जे रस्ते नाहीत ते रस्ते रोजगार हमी योजनेत कसे काय घेण्यात आलेले आहेत? समितीच्या माहिती प्रमाणे शेतकऱ्यांच्या संमती नुसार ग्रामपंचायत स्तरावर रस्त्याचे काम रोजगार हमी योजनेतून घेता येते. विभागाने ३१ कामे रोजगार हमी योजनेतून वगळलेली आहेत. समितीला या कामांची विगतवारी सांगण्यात येत आहे. परंतु ही कामे पूर्ण करण्यासाठी कोणते प्रयत्न करण्यात आले, याबाबत समितीला माहिती देण्यात येत नाही. रस्ते विकास योजना सन २००१-२०२१ च्या नियोजनामध्ये ही कामे नव्हती. रस्त्याला क्रमांक असल्याशिवाय कामे मंजूर करीत नाही. त्यावर मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, रोजगार हमी योजनेच्या कामासाठी अशा प्रकारचे बंधन नाही. त्यानंतर कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद, बांधकाम विभाग, अमरावती यांनी अशी माहिती दिली की,जी कामे बजेटमध्ये प्रस्तावित करावयाची आहेत त्यासाठी क्रमांक आवश्यक असतो. विभागीय सचिव यांनी सांगितले की, एमआरईजीएसची ७५ टक्के कामे ग्रामपंचायती मार्फत केली जातात. पांदण रस्ते, शेत रस्त्यांची ही कामे आहेत. समितीने पुढे विचारणा केली की, रोजगार हमी योजनेच्या कामासंदर्भात प्रश्न विचारलेला आहे. ६ वर्षापूर्वी ३१ कामे मंजूर करण्यात आली होती. त्यापैकी १२ रस्त्यांची कामे अवर्गिकृत आहेत. ज्या रस्त्यांना क्रमांक नाही त्या रस्त्यांची कामे रोजगार हमी योजनेत घेता येतात काय? विभागीय सचिव यांनी सांगितले की, तपासून घेण्यात येईल. त्यावेळी कोणत्या मार्गदर्शक सूचना होत्या. एमआरईजीएसच्या मास्टर प्लॅनमध्ये कोणती कामे घ्यावीत व ती कशा पद्धतीने घ्यावीत यासंबंधीचे नियम आहेत. रोहयो विभागाने या संदर्भात सूचना निर्गमित केलेल्या नाहीत. रस्त्यांबाबत जिल्हानिहाय मास्टर प्लॅन तयार केलेले आहेत. जिल्हापरिषद सार्वजनिक बांधकाम विभागाने रस्त्यांची कामे करताना नियमांचे पालन करणे आवश्यक आहे. विभागाकडून जिल्हा परिषदेला केवळ निधी उपलब्ध करून दिला जातो. जिल्हा परिषदेला नवीन रस्त्यांची कामे घ्यावयाची असतील तर त्यांनी नियमाच्या चौकटीत काम करणे आवश्यक आहे.

व्हीडीआर, ओडीआर, एमडीआर, स्टेट हायवे यांना क्रमांक दिलेले असतात. ग्रामीण भागामध्ये रस्त्यांच्या संदर्भात अशी कार्य पद्धती आहे की, गावातील अंतर्गत रस्ते करीत असताना शेतकऱ्यांच्या जमिनीतून रस्ता जात असेल तर त्यांच्याकडून दानपत्र घेऊन साखळी रस्ता तयार केला जातो. ही एक प्रकारची गावपातळीवरील अंतर्गत व्यवस्था आहे. अशा प्रकारचे व्हिलेज रोड, ज्या रस्त्यांना कोणत्याही प्रकारचा क्रमांक नसतो ते रोजगार हमी योजनेमधून घेता येतात काय? असे समितीनी विचारले असता, विभागीय सचिवांनी सांगितले की, रोहयो विभागाने सन २०११ मध्ये रस्त्यांची कामे घेण्याबाबत मार्गदर्शक सूचना निर्गमित केलेल्या आहेत. शेत रस्ते, पांदण रस्ते यासाठी सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडून तांत्रिक मार्गदर्शन घेतलेले आहे. तथापि, हे रस्ते रोजगार हमी योजनेतून घेता येतात किंवा कसे, हे तपासून घेण्यात येईल.

३१ कामांपैकी १ काम स्थानिक विकास निधीतून पूर्ण करण्यात आले आहे. जिल्हाधिकाऱ्यांनी त्यासाठी मान्यता दिली आहे. अवर्गिकृत रस्त्याचे काम स्थानिक विकास निधीतून घेता येते काय? असे समितीनी विचारले असता, विभागीय उपसचिव यांनी सांगितले की, ग्रामीण भागातील व्हिलेज रोडची कामे सार्वजनिक बांधकाम विभागाकडे आहेत. ती ग्रामपंचायतीची मालमत्ता आहे. व्हिलेज रोडच्या देखभाल व दुरुस्तीची कामे ग्रामपंचायत स्तरावर केली जातात. असे रस्ते वहिवाटीमध्ये दाखविलेले असतात. रस्त्याची लांबी, रुंदी किती आहे याबाबतची माहिती नमूद करून ग्रामपंचायतीने फॉर्म २६ भरुन द्यावयाचा असतो. ग्रामसभेचा ठराव घेऊन अशा रस्त्याच्या कामावर रोजगार हमी योजना, डीपीडीसी, स्थानिक विकास निधीमधून खर्च करता येतो.

कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, सार्वजनिक बांधकाम विभाग क्रमांक २, दर्यापूर या योजनेअंतर्गत पाच रस्त्यांची कामे "इतर योजनेतून करण्यात येईल" असे नमूद केले आहे. कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, सार्वजनिक बांधकाम विभाग क्रमांक २, दर्यापूर यांनी ही कामे इतर योजनेतून पूर्ण करण्याबाबतचे नियोजन केले आहे काय? असे समितीने विचारले असता, कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, दर्यापूर यांनी सांगितले की, विभागाकडे नऊ कामे आहेत. त्यापैकी तीन कामे पूर्ण झाली आहेत. उर्वरित सहा कामांपैकी एक काम डीपीडीसी मधून पूर्ण करण्यात आले आहे. शेडगाव विकास आराखडा अंतर्गत एक काम मंजूर करण्यात आले आहे. बजेटमधून एक काम प्रस्तावित करण्यात येणार आहे आणि पुढील वर्षी डीपीडीसीतून तीन कामे करण्याचे प्रस्तावित आहे.

एकताई लघु पाटबंधारे योजनेचे (ता.चिखलदरा) काम वन जमिनी अभावी बंद पडल्याने सुधारीत अंदाजपत्रक शासनाकडे सादर करणे व एनपीची रक्कम न भरल्यामुळे प्रस्ताव रद्द झाल्याने हे काम रोहयोतून वगळण्यात आल्याने याबाबत सविस्तर खुलासा सादर करावा. तसेच, यास जबाबदार असलेल्यांवर कोणती कारवाई करण्यात आली? सन १९८५ पासून हे काम बंद आहे. हे काम सन २०११ मध्ये रोजगार हमी योजनेतून वगळण्यात आले आहे. मग हे काम पूर्ण होण्याच्या दृष्टीकोनातून मध्यंतरीच्या काळात कोणते प्रयत्न करण्यात आले ? यासंदर्भात कार्यकारी अभियंता, लघुसिचंन (जलसंधारण) विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, सदरहू कामाच्या सुधारीत प्रशासकीय मान्यतेचा प्रस्ताव प्रादेशिक कार्यालयास सादर करण्यात आला होता. मुख्य अभियंता यांनी काही मुद्दे उपस्थित केले होते. पाणी उपलब्धता प्रमाणपत्र मिळाले नसल्यामुळे सदर कामास सुधारित प्रशासकीय मान्यता मिळाली नाही. सदरहू योजनेचे काम वन जमिनी अभावी बंद आहे. या योजनेचे काम करण्यास परवानगी मिळावी, असा प्रस्ताव सादर करण्यात आला होता. त्यावर समितीने विचारणा केली की, वन जमीन असल्यामुळे परवानगी मिळणार नाही याचा त्यावेळी विचार करण्यात आला नव्हता काय ? त्यावर कार्यकारी अभियंता, लघुसिचंन (जलसंधारण) विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, सदर योजनेच्या कामास प्रथम सन १९७९ मध्ये परवानगी मिळाली होती. हे काम वन अधिनियम कायदा १९८० लागू होण्यापूर्वीच सुरू करण्यात आले होते. वन कायदा लागू होईपर्यंत सीओव्हीचे काम पूर्ण झाले होते. वन विभागाच्या हरकतीमुळे हे काम बंद आहे.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**जिल्ह्यातील विविध यंत्रणांकडे ५ ते १० वर्षापर्यंत प्रलंबित असलेल्या अपूर्ण कामांची संख्या बरीच आहे. ही कामे विविध स्थरावर अपूर्ण अवस्थेत असल्याने अपूर्ण कामावर खर्च झालेला शासनाचा निधी पडून राहिला आहे. या कामांच्या बाबतीत त्वरीत निर्णय घेऊन ती कामे सुरू करून पूर्णत्वास नेणे महत्वाचे आहे. अन्यथा शासनाच्या खर्च झालेल्या निधीचा अपव्यय होईल. याबाबत संबंधित यंत्रणा जबाबदार असल्याचे समितीचे मत आहे. यासंबंधात दिरंगाई करणाऱ्या अधिकाऱ्यांवर कारवाई करण्यात यावी व केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल समितीस तीन महिन्यांत सादर करावा अशी समितीची शिफारस आहे.**

**शासनाच्या कामे वगळण्याच्या धोरणामुळे समितीच्या असे निदर्शनास आले की, अनेक जिल्ह्यात अपूर्ण कामे मोठया प्रमाणात आहेत. व ती "वगळण्याच्या" निर्णयामुळे शासनाचा पैसा वाया गेला आहे. ही बाब गंभीर आहे. याबाबत समिती अशी शिफारस करते की, रोजगार हमी योजनेअंतर्गत घेण्यात येणारी कामे पूर्ण करता येतील अशा पद्धतीने निवडण्यात यावीत.**

**(६) सामाजिक वनीकरण :—**

समितीच्या जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेमधील "सामाजिक वनीकरण" यासंदर्भात समितीने विचारणा केली की, सामाजिक वनीकरण कार्यक्रमांतर्गत सन २००८ पासून सन २०१२ पर्यंत किती क्षेत्रावर वृक्ष लागवड करण्यात आली आहे? उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, सन २००८-२००९ मध्ये ६०० हेक्टरचे उद्दिष्ट ठरविण्यात आले होते. मंजूर क्षेत्रापैकी ५९८.९१ हेक्टर क्षेत्रावर ७२९०२८ झाडे लावण्यात आली. यात १५८५ लाभार्थींना याचा लाभ देण्यात आलेला आहे. सन २००९-२०१० मध्ये ४०० हेक्टरचे उद्दिष्ट ठरविण्यात आले होते. मंजूर क्षेत्रापैकी १७७.५० हेक्टर क्षेत्रावर १०१४ लाभार्थींनी एकूण १७७५०० झाडे लावली आहेत. सन २०१०-२०११ मध्ये ६०० हेक्टरचे उद्दिष्ट ठरविण्यात आले होते. मंजूर क्षेत्रापैकी ३१६.८० हेक्टर क्षेत्रावर १६९७ लाभार्थींनी ३२४०५० झाडे लावली आहेत. सन २०११-२०१२ मध्ये २१२ हेक्टरचे उद्दिष्ट ठरविण्यात आले होते. त्यानुसार २१२ हेक्टर क्षेत्रावर ९७० लाभार्थींनी २१२००० झाडे लावली आहेत. जिवंत झाडांची टक्केवारी अनुक्रमे ८६ टक्के, ८४ टक्के, १०० टक्के, आहे. त्यावर समितीने पुढे विचारणा केली की, जीवंत रोपांची टक्केवारी दिलेली आहे. ती झाडे पाहिली आहेत काय ? सन २०१०-२०११ मध्ये जी ३२४०५० झाडे लावण्यात आली आहेत. त्यातील किती झाडे जिवंत आहेत. याची तपासणी संबंधित यंत्रणेकडून करण्यात यावी. यावर उप महासंचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग, अमरावती यांनी सांगितले की, पूर्ण राज्यात झाडांच्या लागवडीच्या संदर्भात एमआरईजीएसच्या माध्यमातून एक नवीन योजना सुरू केली आहे. झाडे जगवण्याची जबाबदारी त्या ठिकाणी काम करणाऱ्या मजुरांवर टाकली आहे. यामुळे जीवंत झाडांची संख्येमध्ये आता वाढ झाली आहे. लावलेल्या झाडांच्या आसपास जी काही नैसर्गिक झाडे उगवलेली असतात त्यांची सुध्दा काळजी घेण्यात येते व ती झाडे सुध्दा मोजली जातात.

समितीने दौऱ्याच्या प्रथम दिवशी ज्या ज्या ठिकाणी भेटी दिल्या त्यामध्ये सामाजिक वनीकरणाचे एक काम चांगले आढळून आले. सामाजिक वनीकरणाच्या कामामुळे समितीला समाधान वाटले एवढे मात्र निश्चित. परंतु जी काही झाडे लावली जातात ती सर्वच्या सर्व जगतात असे मात्र काही होत नाही. ही वस्तुस्थिती आहे.सामाजिक वनीकरणाच्या संदर्भात समिती समाधानी आहे असे समितीने स्पष्ट केले.

समितीच्या दिनांक ११ व १२ जून २०१३ रोजी झालेल्या जिल्हा बैठकीच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली. आश्वासनाच्या अनुषंगाने पुरविण्यात आलेल्या माहितीच्या संदर्भात समितीने विचारणा केली की, सन २०१०-११ मध्ये १६९० शेतकऱ्यांच्या शेतात ३,२४,०५० रोपांची लागवड करण्यात आली होती. परंतु सन २०१३ मध्ये जीवंत रोपांची टक्केवारी फक्त ४० टक्के आढळून आली आहे. जीवंत रोपांची टक्केवारी कमी असण्याची कारणे काय आहेत? यासंदर्भात उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी सांगितले की, सन २०१०-११ मध्ये शेतकऱ्यांच्या खाजगी पडीक जमिनीवर वृक्ष लागवड करण्यात आली होती. खरीप व रब्बी पिके निघाल्यानंतर काठेवाडी गुरे, मेंढ्या सर्व दूर चरतात. त्यामुळे चराई होऊन रोपे जगण्याची टक्केवारी कमी झाली आहे. समितीने पुढे विचारणा केली की, अमरावती भागात मोठ्या प्रमाणावर काठेवाडी गुरे चरतात याची कल्पना होती. मग याबाबत काळजी का घेण्यात आली नाही? उप संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग यांनी सांगितले की, संबंधित शेतकऱ्यांनी रोपांचे संरक्षण करावयाचे असते. समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, जीवंत रोपांची टक्केवारी कमी आली तर संबंधित शेतकऱ्यांकडून वसुली केली जाते काय ? सन २०१०-११ मध्ये रोपांची लागवड करण्यासाठी शेतकऱ्यांना किती अनुदान देण्यात आले होते? उप संचालक, सामाजिक वनीकरण यांनी सांगितले की, शेतकऱ्यांना तीन वर्षे अनुदान दिले जाते. पहिल्या वर्षी खड्डे खोदणे, रोपांची लागवड करणे यासाठी अनुदान दिले जाते. त्यानंतर रोपांची देखभाल, संरक्षण करण्यासाठी अनुदान दिले जाते. एकूण १६९० लाभार्थी शेतकरी होते. पहिल्या वर्षी लाभार्थी शेतकऱ्यांना खड्डे खोदणे, रोपांची लागवड करणे यासाठी १७.०७ लाख रुपये अनुदान देण्यात आले होते. त्यानंतर त्यांना अनुदान देण्यात आले नाही.

समितीने विचारणा केली की, या योजनेची राज्य स्तरावर काय परिस्थिती आहे? समितीच्या माहिती प्रमाणे राज्य स्तरावर या योजनेची परिस्थिती समाधानकारक नाही. विभागीय सचिव यांनी सांगितले की, समितीचे म्हणणे बरोबर आहे. फलोत्पादनासाठी रोजगार हमी योजनेतून निधी दिला जातो. समितीने विभागीय सचिवांच्या निदर्शनास आणले की, पानपिंपरी नावाच्या वनस्पतीची लागवड करण्यासाठी नरेगा योजनेतून अनुदान मिळत होते. अंजनगाव भागात या वनस्पतीची लागवड केली जाते. परंतु मागील वर्षापासून हे अनुदान बंद करण्यात आलेले आहे. त्यामुळे दोन महिन्यात चार शेतकऱ्यांनी आत्महत्या केलेल्या आहेत. त्यावर विभागीय सचिव यांनी याची नोंद घेतलेली आहे असे सांगितले.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**सामाजिक वनीकरणाअंतर्गत रोप वाटीकांमधील रोपे वेळीच वाटप करून झालेल्या लागवडीतील रोपे जिवंत ठेवण्यासाठी पुरेसे लक्ष देणे गरजेचे आहे. मात्र सामाजिक वनीकरणाच्या योजनेतून आजपर्यंत झालेला खर्चाचा विचार केला तर फलनिष्पती नगण्य आहे. ही बाब पर्यावरणाच्या तसेच राज्याच्या विकासाच्या दृष्टीने हानिकारक आहे. या योजनेकडे शासकीय अधिकाऱ्यांचे व सर्व संबंधिताचे पुरेसे लक्ष आहे असे वाटत नाही. म्हणून झाडांच्या लागवडी संदर्भात केलेल्या सूचनांचे काटेकोरपणे पालन करून वृक्षारोपण अधिकाधिक चांगल्या रितीने करण्याच्या दृष्टीने प्रयत्न करण्यात यावे व या संदर्भात केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल समितीला सादर करावा अशी समितीची शिफारस आहे.**

**(७) धडक सिंचन विहीर कार्यक्रम :—**

समितीच्या जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेमधील "धडक सिंचन विहीर कार्यक्रम" यासंदर्भात समितीने विचारणा केली की, सन २००९-१० मध्ये दर्यापूर तालुक्याला १००० विहिरींचा लक्षांक ठरवून देण्यात आला होता. परंतु, लक्षांकापैकी केवळ २५२ विहिरी मंजूर झाल्या असून त्यापैकी प्रत्यक्षात केवळ २०४ विहिरींचे काम पूर्ण झाले आहे. लक्षांकापैकी एवढया कमी प्रमाणात विहिरी का मंजूर करण्यात आल्या? कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन विभाग (जलसंधारण) यानी सांगितले की, भूवैज्ञानिक मूल्यांकनानुसार विहिरी मंजूर केल्या जातात. ज्या विहिरींना पाणी लागण्याची शक्यता असते अशाच विहिरी मंजूर केल्या जातात. त्यावर समितीने अशी विचारणा केली की, गटविकास अधिकाऱ्यांकडे धडक सिंचन विहिरींचे अर्ज येत नाहीत काय? गटविकास अधिकारी (दर्यापूर) यानी सांगितले की, विहिरींच्या संदर्भातील अर्ज त्यांच्याकडे येत नाहीत. कार्यकारी अभियंत्याकडेच सर्व माहिती असते. त्यांच्याकडे फक्त मॉनेटरींगचे काम आहे.

समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, विहिरींसाठी किती शेतकऱ्यांचे अर्ज आले, त्यापैकी किती विहिरींची माहिती मूल्ल्यांकनासाठी पाठविली गेली याची माहिती न देता विहिरींचे अर्ज त्यांच्याकडे येतच नाहीत ? अशा प्रकारची माहिती समितीला देणे योग्य नाही. यावर कार्यकारी अभियंता, लघुसिंचन (जलसंधारण) विभाग यांनी सांगितले की, विहिरींचे अर्ज त्यांच्याकडे येत नाहीत. गटविकास अधिकाऱ्यांकडे येत असतात.

गटविकास अधिकारी सांगत आहेत की, धडक सिंचन विहिरींचे अर्ज त्यांच्याकडे येत नाहीत हे बरोबर आहे काय? मूल्यांकन आणि पेमेंट कोण करते याची सर्व माहिती समितीला देण्यात यावी. असे समितीने स्पष्ट केले असता, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती यांनी सांगितले की, गटविकास अधिकाऱ्यांकडे विहिरींसाठी लाभार्थ्यांचे सर्व अर्ज एकत्रित केले जातात व त्यांच्याकडून ते शिफारसीसह जिल्हाधिकाऱ्यांकडे पाठविले जातात. त्यानंतर माननीय पालक मंत्र्यांच्या अध्यक्षतेखालील समिती विहिरींना मंजूरी देते व त्यानुसार लाभार्थ्यांना विहिरींचे वाटप करण्यात येते. सर्व विभागांना काम वाटून दिले आहे. बांधकाम विभाग, परिसर अभियांत्रिकी इत्यादी संबंधित यंत्रणांना सामावून घेण्यात आले आहे.

यासंदर्भात समितीने पुढे अशी विचारणा केली की, किती अर्ज आले होते ही माहिती गटविकास अधिकाऱ्यांनी समितीला द्यावी? गटविकास अधिकारी, दर्यापूर यांनी सांगितले की,२५० अर्ज आले होते. समितीने पुढे विचारणा केली की, २५० अर्जांची छाननी केल्यानंतर त्यातील किती अर्ज अंतिमतः पात्र ठरले? गटविकास अधिकारी यांनी सांगितले की, ३२ अपात्र अर्ज वगळून २२० अर्ज समितीकडे पाठविले. समितीने विचारणा केली की, लक्षांकापैकी २५२ विहिरी कशा मंजूर केल्या? २०४ विहिरी पूर्ण व ४८ अपूर्ण आहेत. २२० लाभार्थ्यांचे अर्ज पात्र ठरले असताना २५२ विहिरी मंजूर केल्या जातात म्हणजे नवीन विहिरी अस्तित्त्वात आल्या आहेत? उप विभागीय अधिकारी, धारणी यांनी सांगितले की, अमरावती विभागातील ५ जिल्हे व वर्धा या भागाकरिता ६४ हजार विहिरींचा कार्यक्रम निश्चित केला होता. मी या कामाशी संबंधित असल्यामुळे समितीला सांगू इच्छितो की, जे चांगले काम झाले आहे त्यातील हे एक काम आहे. पूर्वी विहिरीसाठी १ लाख रुपये अनुदान दिले जात होते. याकरिता जिल्हा स्तरावर पालकमंत्र्यांच्या अध्यक्षतेखाली समिती होती. सन २००५ मध्ये शासन निर्णय काढल्यानंतर प्रमाणक पद्धत सुधारित करण्यात आली. पूर्वी १ लाख रुपयांच्या अनुदानामध्ये विहीर पूर्ण करावयाची होती. त्यावेळी १० हजार रुपये अग्रीम द्यायची तरतूद होती. या विहीर योजनेसाठी लक्षांक जीएसडीएने ठरवून दिलेले होते. दर्यापूर तालुक्यासाठी खूप प्रयत्न केले. डीपीडीसीमध्ये प्रश्न उपस्थित झाल्यानंतर पुन्हा सर्व्हे करून लक्षांक वाढवून घेण्यात आले. अतिरिक्त ३०० विहिरींचे लक्षांक वाढवून मिळाले. ३०० पैकी ३०० विहिरी पूर्ण केल्या आहेत.

समितीने पुढे स्पष्ट केले की, जे चांगले काम झाले त्याबद्दल समितीची तक्रार नाही, त्याकरिता समिती यंत्रणेला शाबासकी देणार आहे. २५२ पैकी २१२ विहिरी पूर्ण केल्या त्याबद्दल शाबासकी मिळण्यास यंत्रणा पात्र आहेत. खालच्या पातळीवरील अधिकारी चूकीची माहिती देत आहेत, त्यांना योग्य उत्तर देता येत नाही. समितीची दिशाभूल केली जात आहे. विहिरींचा कार्यक्रम अत्यंत चांगला आहे हे समितीला मान्य आहे. परंतु समितीची दिशाभूल का करीत आहात? विहिरीच्या कार्यक्रमाला शेतकऱ्यांकडून चांगला प्रतिसाद मिळाला आहे. काही शेतकऱ्यांनी १ लाख रुपये अनुदान मिळाले असताना स्वतःचे २-२ लाख रुपये घालून चांगली विहीर बांधण्याचे काम केले. हे शासनाच्या लक्षात आल्यानंतर अनुदानाची रक्कम वाढवून २.९० लाख एवढी करण्यात आली. चांगले काम होते त्याला शासनाकडून सकारात्मक प्रतिसाद मिळतो. अशा प्रकारची शिफारस करण्यासाठी ही समिती उदाहरण शोधण्याच्या प्रयत्नात असते.

समितीने विचारणा केली की, भू-वैज्ञानिक विभागाकडून लक्षांक कसे निश्चित केले जाते? अर्ज गटविकास अधिकाऱ्यांकडे सादर होत असताना गटविकास अधिकाऱ्यांनी असत्य माहिती समितीला दिली आहे त्याबद्दल त्यांचे स्पष्टीकरण मागविण्यात यावे. तालुक्याच्या प्रमुख अधिकाऱ्याला विहीर मंजूर करण्याबाबतचे लाभार्थ्यांचे अर्ज कोणाकडे पाठविण्यात येतात याची माहिती समितीला देता आलेली नाही, ही बाब खेदजनक आहे. २५२ मंजूर विहिरींपैकी पूर्ण झालेल्या विहिरींच्या संख्या २०४ असताना माहिती पुस्तिकेतील कॉलम क्रमांक १ मध्ये मंजूरपैकी अपूर्ण असलेल्या विहिरी ४८ आणि अग्रीम रक्कम घेऊन काम सुरू न केलेल्या कामांची संख्या ३२ असल्याचे नमूद केले आहे. २१२ पैकी या ८० विहिरी वजा केल्या तर पूर्ण झालेल्या विहिरींची संख्या १३२ इतकी येते. मग पूर्ण झालेल्या विहिरींची संख्या २०४ नमूद करून समितीची दिशाभूल का केली जात आहे? मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, ४८ पैकी ३२ लाभार्थीनी कामच सुरू केलेले नाही. समितीने पुढे विचारले की, ४८ विहिरी अपूर्ण आहेत आणि ३२ लाभार्थ्यांनी अग्रीम घेऊन काम सुरू केले नाही. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती यांनी सांगितले की, २५२ पैकी २०४ विहिरींचे काम पूर्ण झाले असून ४८ विहिरी अपूर्ण आहेत. ४८ पैकी काही विहिरींचे काम सुरू व्हायचे आहे तर काही विहिरींचे काम अपूर्ण आहे. समितीने स्पष्ट केले की, अपूर्ण म्हणजे काम पूर्ण झालेले नाही अशा विहिरी आणि अग्रीम घेऊन सुद्धा काम सुरू केलेले नाही अशा ३२ विहिरी आहेत, त्या ३२ विहिरी अपूर्ण कामामध्ये अंतर्भूत होणार नाहीत.

लक्षांक ठरवून देण्याशी भू-वैज्ञानिक विभागाचा काही संबंध नाही. १००० अर्ज आले तर १००० विहिरी मंजूर केल्या पाहिजेत. शासनाने सर्क्युलर काढले आहे त्यानुसार भू-वैज्ञानिक विभागाचा दाखला घ्यावा लागतो. परंतु अर्ज घ्यायला हरकत नाही. भू-वैज्ञानिक विभाग लक्षांक ठरवून देतो असे त्यांनी समितीला सांगितले. १००० विहिरींचा लक्ष्यांक ठरवून दिला असला तरी त्या भागात सलाईन ट्रॅक असल्यामुळे भू-वैज्ञानिक विभागाचा दाखला मिळू शकत नाही. त्यांच्याकडून शेततळ्याची शिफारस केली जाते. भूजल सर्वेक्षण विभागाची भूमिका काय आहे हे स्पष्ट करण्यात यावे.

यासंदर्भात जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, १०६ गावे अशी आहेत ज्या गावांमध्ये सलाईन ट्रॅक आहे. ती गावे वगळून इतर गावांमध्ये विहीर मंजूर करायला हरकत नाही. त्यावर समितीने विचारले की, १०६ गावे खारपाणपट्ट्यात आहेत, त्या ठिकाणी विहीर मंजूर करू नये. उर्वरित गावांना मंजूर का करीत नाही ? दर्यापूर तालुक्याला १००० विहिरींचे उद्दिष्ट दिले असेल तर ते पूर्ण करण्यात यावे.

उपायुक्त (रोहयो) यांनी सांगितले की, १००० अर्ज स्वीकारून ते जीएसडीएकडे पाठविण्यात यावेत. जे अर्ज पात्र ठरतील तेवढ्या विहिरी मंजूर करण्यात याव्यात. त्यावर समितीने विचारले की, १४३८ कास्तकारांनी पैसे घेतले आणि विहिरीचे काम पूर्ण केले नाही. त्यांच्यावर कोणती कारवाई करण्यात आली? त्यांना दिलेला निधी वसूल केला का?

यासंदर्भात जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, संबंधित लाभार्थ्यांना कारणे दाखवा नोटिसा दिलेल्या आहेत. आर.आर.सी.ची कार्यवाही सुरू केली आहे. समितीने विचारणा केली की, वसूलीची कार्यवाही पटवारी देखील करू शकतो. वसुली करण्यापेक्षा मंजूर झालेल्या विहिरी पूर्ण

करण्याचा प्रयत्न करावा.  कागदोपत्री १०० टक्के विहिरी पूर्ण होतील असे नाही, परंतु जेवढ्या पूर्ण होतील तेवढ्या विहिरी पूर्ण कराव्यात. उर्वरित लोकांकडून निधी वसूल करण्याचा प्रयत्न करावा. जिल्ह्यात जवाहर विहिरींचा कार्यक्रम बंद होता काय, वैयक्तिक लाभार्थींची योजना आहे काय ? पूर परिस्थितीमुळे खचलेल्या विहिरींची माहिती समितीला थोडक्यात द्यावी. मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती यांनी सागितले की, जिल्ह्यात ६५२० विहिरींचा लक्षांक होता. मंजूर विहिरींपैकी ६२८६ विहिरींचे काम सुरू झाले व त्यापैकी ५५६६ विहिरींचे काम पूर्ण झाले, तर ५६७ विहिरी अपूर्ण आहेत. सन २००७ मधील पूर परिस्थितीमुळे विहिरी खचल्या होत्या. सन २००७ मध्ये २१०२ विहिरींचा लक्षांक ठरवून दिला होता. यापैकी १९७९ विहिरी मंजूर झाल्या. पैकी १०३८ विहिरी पूर्ण झाल्या तर ९४१ विहिरी अपूर्ण आहेत. सदरहू योजना दिनांक ३१ डिसेंबर २०१० पर्यंत मंजूर होती. आता ही योजना बंद आहे.

रोजगार हमी योजना समितीच्या दिनांक १० व ११ जून २०१३ रोजी झालेल्या जिल्हा बैठकीच्या अनुषंगाने दिनांक २ जानेवारी २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेण्यात आली. त्यावेळी समितीने विचारणा केली की, धडक सिंचन विहीर कार्यक्रमाअंतर्गत दर्यापूर तालुक्यातून ७८१ अर्ज आले होते. त्यापैकी फक्त ४२ गावांतील २८१ विहिरींचे उद्दिष्ट देण्यात येऊन फक्त २५१ विहिरी मंजूर करण्यात आल्या होत्या त्यापैकी किती विहिरींची कामे पूर्ण झाली आहेत ?

गटविकास अधिकारी यांनी सांगितले की, दर्यापूर तालुक्यातील एकूण ७८१ अर्ज आले होते. जीएसडीए च्या निकषानुसार ४२ गावांतील २८१ विहीरींचे उद्दिष्ट निश्चित करण्यात आले होते. त्यापैकी २५१ विहिरी मंजूर करण्यात आल्या असून २४४ लाभार्थ्यांना प्रथम अग्रीम देण्यात आला. त्यापैकी ३२ लाभार्थ्यांनी अग्रीम घेऊनही विहीरींची कामे सुरू केली नाहीत. २४४ लाभार्थ्यांपैकी १६२ विहिरींची कामे प्रगतीपथावर आहेत. ज्या ३२ लाभार्थ्यांनी अग्रीम घेऊन काम सुरू केले नाही त्यांचे प्रस्ताव तहसीलदार यांच्याकडे पुढील कार्यवाहीसाठी पाठविण्यात आले आहेत.

समितीने विचारणा केली की, त्या भागातील लोकांच्या अशा तक्रारी आहेत की, विहिरींची कामे पूर्ण झाली असून त्यांना अनुदान देण्यात आले नाही. पहिल्या टप्प्याचे काम पूर्ण झाले असून काही लाभार्थ्यांना अनुदान दिले नाही. तसेच काही लाभार्थ्यांनी पहिल्या व दुसऱ्या टप्प्यांची कामे पूर्ण केली तरी देखील त्यांना अनुदान न मिळाल्यामुळे तिसऱ्या टप्प्याची कामे पूर्ण करता आली नाहीत. त्यामुळे हे अनुदान किती दिवसांत देण्यात येईल? जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद यांच्याकडून काम पूर्ण झाल्याचे प्रमाणपत्र सादर झाल्यावर जिल्हाधिकारी कार्यालयाकडून अनुदानाचे वाटप करण्यात येते. अनुदान मिळाले नाही अशा प्रकारची तक्रार प्राप्त झालेली नाही. समितीने विचारणा केली की, काही लाभार्थ्यांना अनुदानाचे वाटप झाले नाही काय ? तेथील कार्यकारी अभियंत्याविरोधात लोकांच्या तक्रारी आहेत? मुख्य कार्यकारी अधिकारी यांनी सांगितले की, मागणी प्रमाणे अनुदानाचे वाटप झाले आहे. त्यानंतर कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, दर्यापूर यांनी सांगितले की, दर्यापूर तालुक्यात २५१ विहिरी मंजूर करण्यात आल्या आहेत, त्यापैकी ४७ विहीरी पूर्ण झाल्या असून त्यांना एक लाख रुपये अनुदान देण्यात आले आहे. १६५ विहिरींची कामे प्रगतीपथावर आहेत. त्यावर समितीने विचारणा केली की, अनेक लाभार्थ्यांना अनुदान मिळाले नाही अशा लोकांच्या तक्रारी आहेत. गट विकास अधिकारी व संबंधित कार्यकारी अभियंता यांनी बैठक संपल्यानंतर संबंधित सन्माननीय सदस्यांसोबत एकत्र बसून लाभार्थ्यांना अनुदान वाटपात काय अडचण आहे त्याबाबत सविस्तर चर्चा करून त्यांचा प्रश्न सोडवावा. कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प, दर्यापूर यांनी समितीला होकारार्थ उतर दिले.

सिंचन विहीर कार्यक्रमाअंतर्गत लाभार्थ्यांना लाभ मिळाला पाहिजे, यामध्ये सामाजिक वनीकरण असो किंवा इतर योजना असतील त्यांचा लाभ संबंधितांना मिळाला पाहिजे. रोजगार हमी योजनेच्या कामावर ज्या ठिकाणी मजूर मिळतात तेथे मजुरांकडून कामे करून घेतली पाहिजेत. परंतु अनेक ठिकाणी मजूर उपलब्ध असून मशीनद्वारे कामे केली जातात. धारणी व चिखलदरा या भागात रोजगार हमी योजनेवर मजूर उपलब्ध असून त्यांना कामे दिली जात नाहीत. तेथील कामे मशीनद्वारे करण्यात येतात हे बरोबर नाही, याकडे संबंधित अधिकाऱ्यांनी लक्ष घालावे असे समितीने स्पष्ट केले.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**जिल्ह्यात धडक सिंचन विहीरींसाठी लोकांची मोठ्या प्रमाणात मागणी असल्याने यंत्रणेने शासनाकडून लक्षांक वाढवून घेतले मात्र लक्षांकाप्रमाणे मंजूर झालेल्या विहिरींचे काम विहीत काल मर्यादेत पूर्ण करण्यात संबंधित यंत्रणेला अपयश आले आहे. त्याचप्रमाणे काही लाभार्थ्यांनी विहिरींचे अनुदान घेऊनही काम सुरू न केल्याने शासनाच्या निधीचा अपव्यय झाला आहे. त्यामुळे हा निधी लाभार्थ्यांकडून वसूल करण्याचा संबधित यंत्रणेने प्रयत्न करावा. तसेच लक्षांकाप्रमाणे मंजूर केलेल्या परंतु, अपूर्ण असलेल्या विहिरींची कामे तातडीने पूर्ण करण्यासाठी संबधित यंत्रणेने तात्काळ उपाययोजना करावी व केलेल्या कार्यवाहीचा अहवाल समितीस सादर करावा.**

**(८) गैरव्यवहाराची प्रकरणे :—**

समितीच्या जिल्हा बैठकीच्या वेळी समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहिती पुस्तिकेमधील "गैरव्यवहाराची प्रकरणे" यासंदर्भात समितीने विचारणा केली की, गैरव्यवहाराची प्रकरणे प्रलंबित आहेत. त्याचा आढावा विभागीय आयुक्त कार्यालयाच्या स्तरावर घेण्यात आला आहे काय?

याबाबत उपायुक्त (रोहयो) यानी सांगितले की, जिल्ह्यात एकूण सहा गैरव्यवहाराची प्रकरणे आहेत. त्यापैकी चार प्रकरणांची चौकशी सुरू आहे, दोन प्रकरणे निकाली निघाली आहेत. विभागीय आयुक्त स्तरावर गैरव्यवहाराच्या प्रकरणांचा आढावा घेण्यात येतो. सह संचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग, अमरावती यांच्याकडील एक प्रकरण होते. श्री. सी. एस. चौधरी, तत्कालीन लागवड अधिकारी, नांदगाव खंडेश्वर यांना महाराष्ट्र ग्रामीण रोजगार हमी योजने अंतर्गत वृक्ष लागवडीच्या कामात निष्काळजीपणा केल्याबद्दल जबाबदार धरून त्यांची एक वार्षिक वेतनवाढ दोन वर्षाकरिता रोखण्याची शिक्षा देण्यात आली आहे. विभागीय चौकशी अधिकाऱ्यांचे पद तीन वर्षापासून रिक्त असल्यामुळे निकाल लागण्यास थोडासा विलंब लागत आहे. समितीने पुढे विचारणा केली की, श्री. जे. टी. राणे, परिक्षेत्र अधिकारी व श्री. पी. पी. आंबेकर, वन संरक्षक यांनी कामामध्ये अनियमितता केली आहे. सदरहू प्रकरण कोणत्या वर्षातील आहे या दोन अपचारी कर्मचाऱ्यांपैकी कोणाचे निधन झाले आहे काय? याबाबत उपायुक्त (रोहयो) यांनी सांगितले की, सदरहू प्रकरण सन २००३ मधील आहे. विभागीय चौकशी अधिकाऱ्यांकडे अपचारी कर्मचारी चौकशीसाठी येत असतात. सन २००८ मधील अनियमिततेचे एक प्रकरण आहे. या प्रकरणी श्री.डी.आर.भोसरेकर व श्री.अब्दुल बशील अहमद सजिद शेख यांना जबाबदार धरण्यात आले असून त्यांना निलंबित करण्यात आले आहे. या प्रकरणाची चौकशी प्रादेशिक विभागीय अधिकाऱ्याकडे सुरू आहे.

समितीने पुढे असे स्पष्ट केले की, महाराष्ट्र विधानमंडळाची रोजगार हमी योजना समिती दोन दिवसांसाठी अमरावती जिल्ह्याच्या दौऱ्यावर आली आहे. काल समितीने विविध कामांची पाहणी केली व आज साक्ष घेण्यात येत आहे. अमरावती जिल्ह्याच्या दौऱ्यावर समिती आलेली असल्यामुळे काही लोकांच्या तक्रारी समितीला प्राप्त झालेल्या आहेत. या सगळ्या तक्रारींची यादी तयार करण्यात आली असून विधानमंडळाच्या सचिवांमार्फत जिल्हाधिकाऱ्यांना पाठविण्यात येईल. या तक्रारींची संबंधित विभागामार्फत चौकशी करून तत्संबंधीचा अहवाल समितीला सादर करावा.

समितीच्या दिनांक ११ व १२ जून, २०१३ रोजी झालेल्या जिल्हा बैठकीच्या अनुषंगाने समितीने दिनांक २ जानेवारी, २०१४ रोजी विभागीय सचिवांची साक्ष घेतली. आश्वासनाच्या अनुषंगाने पुरविण्यात आलेल्या माहितीच्या संदर्भात समितीने विचारणा केली की, जिल्ह्यातील गैरव्यवहाराची चार प्रकरणे प्रलंबित दर्शविण्यात आली आहेत. त्याबाबत सद्यःस्थिती काय आहे? ज्या प्रकरणांची विभागीय चौकशी सुरू आहे ती किती महिन्यात पूर्ण करण्यात येईल.

उपायुक्त (रोहयो), यांनी सांगितले की, रोजगार हमी योजना समितीने अमरावती येथे भेट दिली त्यावेळी गैरव्यवहाराची चार प्रकरणे प्रलंबित होती. त्यापैकी दोन प्रकरणे निकाली निघाली आहेत. एक प्रकरण आयुक्त कार्यालयाकडे विभागीय चौकशीसाठी प्रलंबित आहे. विभागीय चौकशीचा अहवाल शासनाकडे सादर करण्यात येणार आहे. परंतु अमरावती विभागात चौकशी अधिकाऱ्यांची पदे गेल्या तीन वर्षापासून रिक्त असल्यामुळे विभागीय चौकशीसाठी उशीर होत आहे. तरीही सहा महिन्यांत विभागीय चौकशी पूर्ण करण्यात येईल.

समितीने विचारणा केली की, अचलपूर व कांडली या ठिकाणी ९ मृत व्यक्तींच्या नावावर रोजगार हमी योजनेचे पैसे काढण्यात आले आहेत. त्याबाबत संबंधितांवर कोणती कारवाई करण्यात आली ?

जिल्हाधिकारी यांनी सांगितले की, या प्रकरणाची चौकशी तहसीलदार व गट विकास अधिकाऱ्यांकडून करण्यात आली आहे. कांडली गावात रोजगार हमी योजनेचे कोणतेही काम झालेले नसून मृत व्यक्तींच्या नावे पैसे काढल्याचे आढळून आले नाही. एमआयएसमध्ये कोणतेही नोंद असल्याचे आढळून आले नाही असा अहवाल गट विकास अधिकारी यांनी लेखी सादर केला आहे.

गैर व्यवहारांच्या सर्व प्रकाराबाबत समितीला असे म्हणायचे आहे की, सन २००३ पासून २०१३ पर्यंत अनेक गैरव्यवहारांची प्रकरणे झाली आहेत. तेव्हापासून अनेक प्रकरणांच्या चौकशीची कामे प्रलंबित आहेत, यामध्ये अनेक अधिकारी दोषी आहेत, १० वर्षाचा कालावधी लोटला असून त्यातील अनेक अधिकारी सेवानिवृत्त झाले आहेत. ही प्रकरणे १० वर्षे प्रलंबित ठेवण्यामागे संबंधित अधिकारी सेवानिवृत्त व्हावेत, कोणावरही कारवाई होऊ नये. अधिकाऱ्यांना संरक्षण मिळावे, चौकशी अधिकारी तातडीने नेमण्यात येऊ नये, असा प्रकार करण्यात येत आहे, अधिकाऱ्यांकडून अधिकाऱ्यांना संरक्षण दिले जाते की काय अशी शंका येण्यास वाव आहे. याबाबत सचिवांनी काळजी घेऊन लक्ष घालावे असे समितीने स्पष्ट केले असता, विभागीय सचिवानी त्यास होकारार्थी उत्तर दिले.

**अभिप्राय व शिफारशी :**

**अमरावती जिल्ह्यातील गैरव्यवहारांची एकूण सहा प्रकरणे असून यापैकी बहुतांश प्रकरणे विभागीय आयुक्त स्तरावर निर्णयासाठी प्रलंबित आहेत. काही गैरव्यवहार प्रकरणात गुंतलेले अनेक संबंधित अधिकारी सेवानिवृत झाले आहेत. शासनाच्या धोरणानुसार त्यांच्यावर जबाबदारी ठेवता येत असली तरी गैरव्यवहाराची प्रकरणे ठराविक कालावधीत निर्णयाप्रत आली पाहिजेत. गैरव्यवहाराच्या प्रकरणामध्ये संबधित कर्मचारी/अधिकारी सेवेत असतानांच प्रकरणे निकाली काढण्यासाठी प्रयत्न करावेत व या प्रकरणी सुरू असलेली कारवाई त्वरित पूर्ण करण्यात यावी व या संदर्भात घेतलेल्या निर्णयाची माहिती समितीला सादर करण्यात यावी अशी समितीची शिफारस आहे.**

# परिशिष्ट एक
# अपूर्ण कामे

## अपुर्ण कामाचा विभागनिहाय गोषवारा

| अ. क्र. | यंत्रणा | १ ते ५ वर्षातील अपुर्ण कामांची संख्या | ६ ते १० वर्षातील अपुर्ण कामांची संख्या | १० वर्षावरील अपुर्ण कामांची संख्या | शेरा |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ |
| १ | कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर. | १ | - | - | एकुण कामे संख्या -८२<br>१) पुर्ण झालेली कामे संख्या-०९<br>२) वगळण्यात आलेली कामे संख्या -५८<br>३) पग्रारोहयांत वर्ग केलेल्या कामांची संख्या -१०<br>४) निरीक्षनानंतर वगळावयाच्या कामाची संख्या-४<br>५) इतर योजनेमधून पुर्ण करावयाचे असल्यामुळे रोहयोमधून वगळावयाची कामे संख्या -१ |
| २ | कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अमरावती. | ५ | ३ | - | |
| ३ | कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद बांधकाम विभाग, अमरावती. | १२ | २८ | ३ | |
| ४ | कार्यकारी अभियंता, विशेष प्रकल्प विभाग, अमरावती. | २ | ८ | - | |
| ५ | कार्यकारी अभियंता, लघु पाटबंधारे (स्थानिक स्तर) विभाग अमरावती | - | ३ | १ | |
| ६ | कार्यकारी अभियंता, उर्ध्व वर्धा कालवे विभाग क्र ३ धामणगांव रेल्वे | - | - | १ | |
| ७ | कार्यकारी अभियंता, जिल्हा परिषद लघु पाटबंधारे विभाग अमरावती | २ | २ | २ | |
| ८ | विशेष प्रकल्प विभाग, सा.बा क्र.२ दर्यापूर | १० | - | - | |
| ९ | उपवनसंरक्षक, वन्यजीव क्रमांक १ (सिपना), परतवाडा | - | - | २ | |
| | एकुण | ३२ | ४१ | ९ | |

**प्रश्न क्रमांक ९ : अपूर्ण कामे**

काम सुरु झाल्यापासून अपूर्ण असलेल्या कामाबाबतची माहिती खालील तक्त्यात द्यावी. १ ते ५ वर्षांपेक्षा जास्त कालावधी लोटलेल्या कामाची माहिती तालुकानिहाय व ग्रामपंचायत / यंत्रणा निहाय वेगवेगळी देण्यात यावी.

| अ. क्र. | तालुका निहाय अपूर्ण कामाचे [illegible] | अपूर्ण कामांचे नाव (कामाचा प्रकार [illegible] तलाव, [illegible], [illegible], रस्ते, [illegible] इत्यादी) | मूळ अंदाजपत्रकानुसार कामाची किंमत | [illegible] प्रशासकीय मान्यता [illegible] (जि.प./ता.प./ग्रा.प./[illegible]) | [illegible] | [illegible] अपूर्ण असल्याची कारणे | [illegible] | आतापर्यंत [illegible] झालेला खर्च | अपूर्ण [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| | | | | | | | | | | |
| | एकूण | | | | | | | | | |

प्रश्न क्रमांक ९ : अपूर्ण कामे

[illegible]

| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| सार्वजनिक बांधकाम विभाग, [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | | [illegible] |
| सार्वजनिक बांधकाम विभाग, [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| २ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ३ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ४ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

खालील तक्त्यात ... माहिती

| अ.क्र. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | जिल्हाधिकारी कार्यालय ... दि. .../२०११ [illegible] |

६ ते १० वर्षे

| | | | | | | | | | | | |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

जि.प. ... विभाग, [illegible]

[illegible]

| | | | | | | | | | | | |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | जिल्हाधिकारी कार्यालय [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

[illegible]

| क्र.सं. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | कैफियत |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | काम पूर्ण |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | काम पूर्ण |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | काम पूर्ण |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | काम पूर्ण |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | निर्माणाधीन [illegible] |

खालील तक्त्यात [illegible] माहिती

| अ. क्र. | अनुक्रमांक [illegible] संख्या | अपूर्ण [illegible] (प्रकार [illegible], [illegible], [illegible]) | एकूण [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] अपूर्ण [illegible] | [illegible] | [illegible] | अपूर्ण [illegible] पूर्ण [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| ४४ | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] अपूर्ण | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | काम पूर्ण |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |

खालील तक्त्यात यंत्रणानिहाय माहिती

| अ.क्र. | [illegible] अपूर्ण कामांची संख्या | अपूर्ण कामाचे नाव व ठिकाण [illegible] | मूळ अंदाजपत्रकीय किंमत | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | अपूर्ण काम [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] रस्ता [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ७ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

खालील तक्त्यात योजनानिहाय माहिती

| अ.क्र. | तालुका निहाय अपूर्ण योजनांची संख्या | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १५ | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | | [illegible] |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

खालील तक्त्यात मंत्रालयनिहाय माहिती

| अ.क्र. | तालुका निहाय [illegible] | संपूर्ण कामाचे नाव व [illegible] प्रकार (रस्ते, [illegible] इत्यादी) | [illegible] किंमत | पूर्ण [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

खालील [illegible] संस्थानिहाय माहिती

| [illegible] | तालुका [illegible] | [illegible] (रस्ता, [illegible] इत्यादी) | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / [illegible] |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | [illegible] | कुर्डी [illegible] रस्ता [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | शिरूड [illegible] पत्र [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] अखेर [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | नाही | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| | | | | [illegible] | [illegible] | | | | | |

खालील [illegible] माहिती

| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| विशेष प्रकल्प विभाग, [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | - | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | - | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | - | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | - | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

[illegible]

| अ. क्र. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | काम पूर्ण | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] | कामे पूर्ण | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | काम पूर्ण | काम सुरु / [illegible] |

खालील तक्त्यात [illegible] माहिती

| अ. क्र. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| निरंक | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| निरंक | | | | | | | | | | |

स्थगित [illegible] योजनानिहाय माहिती

| अ.क्र. | तालुका [illegible] | [illegible] कामाचा प्रकार (पाझर तलाव, गाव तलाव, [illegible]) | मुळ प्रशासकीय [illegible] किंमत | मुळ [illegible] मान्यता [illegible] | [illegible] | [illegible] | मंजूर [illegible] | आवश्यक [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| कार्यकारी अभियंता, [illegible] विभाग जिल्हा परिषद, अमरावती | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| २ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| ३ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ४ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| ५ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] |
| ६ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

झालेल्या नुकसानाचे क्षेत्रफळनिहाय माहिती

| अ.क्र. | तालुका / विभाग / भूसंपादन प्रकरण संख्या | प्रकल्पाचे नाव व [illegible] तालुका, [illegible] इत्यादी | एकूण [illegible] क्षेत्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| कार्यकारी अभियंता, [illegible] विभाग, [illegible], इचलपूर | | | | | | | | | | |
| [illegible] | | | | | | | | | | |
| 1 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 2 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 3 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 4 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 5 | १० | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 6 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| 7 | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

खालील तक्त्यात प्रकल्पनिहाय माहिती

| अ.क्र. | [illegible] संख्या | [illegible] इत्यादी ) | [illegible] विभाग | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] | अपूर्ण | [illegible] |
| २ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| ३ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

[illegible]

ठिकाण

[illegible]

[illegible]

खालील तक्त्यात [illegible] माहिती

| अ. क्र. | संयुक्त [illegible] | [illegible] प्रकार (सिंचन [illegible], [illegible], [illegible] इ.) | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| कार्यकारी अभियंता [illegible] | | | | | | | | | | |
| १ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| २ | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

# परिशिष्ट दोन
# गैरव्यवहाराची प्रकरणे

प्रश्न क्र. १० : गैरव्यवहारासंबंधी प्रकरणे -

**महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना** - महाराष्ट्र योजनेच्या कामावर आढळून आलेल्या गैरव्यवहाराच्या प्रकरणांपैकी ज्या चौकशी साठी (कोणत्याही स्तरावर) प्रलंबित असलेल्या प्रकरणांची तालुका निहाय व यंत्रणा निहाय माहिती खालील नमुन्यात द्यावी. (कोणत्याही स्तरावर प्रलंबित असलेल्या [illegible] ओळख [illegible] द्यावी.

| अ.क्र. | जिल्ह्याचे नाव | एकूण प्रकरणे | जिल्हास्तरावर प्रलंबित [illegible] | आयुक्त स्तरावर | | [illegible] | शासन स्तरावर | | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | विभागीय चौकशी [illegible] | [illegible] | | विभागीय [illegible] | [illegible] | | | |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
| १ | अमरावती | ६ | | | | | | | | | |

तक्ता क्र. २० : गैरव्यवहाराची प्रकरणे -

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार हमी योजना - महाराष्ट्र राज्याच्या कामावर आढळून आलेल्या गैरव्यवहाराच्या प्रकरणांपैकी सद्या चौकशी चालू [illegible] प्रलंबित असलेल्या प्रकरणांचे तालुका निहाय व यंत्रणा निहाय माहिती खालील तक्त्यात द्यावी. ( यंत्रणेच्या स्तरावर प्रलंबित असलेल्या प्रकरणाच्या चौकशीच्या [illegible] )

| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ / १२ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | - | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

| अ. क्र. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | मागणी पूर्ण [illegible] आहे | शेरा / अभिप्राय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| १ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| २ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] |

| [illegible] | कामाचे नांव | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] |

| अ. क्र. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शेरा / अभिप्राय |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| ६ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | | | [illegible] |

# परिशिष्ट तीन
# बैठकीचे संक्षिप्त कार्यवृत्त

(शा.म.मु.) एचबी २७५—९ (७००—५-२०१४)

**सोमवार, दिनांक १० जून २०१३**

समितीची अनौपचारिक बैठक शासकीय विश्रामगृह, अमरावती येथे घेण्यात आली. सदरहू बैठकीस खालील सदस्य उपस्थित होते :—

**समिती प्रमुख :**

(१) ॲड. सदाशिवराव पाटील, वि.स.स.

**समिती सदस्य :**

(२) श्री. अनिल बावनकर, वि.स.स.
(३) श्री. वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.
(४) श्री. दिलीप वाघ, वि.स.स.
(५) डॉ. खुशाल बोपचे, वि.स.स.
(६) श्री. हरिश पिंपळे, वि.स.स.
(७) प्रा. अतुल देशकर, वि.स.स.
(८) ॲड. अशिष जयस्वाल, वि.स.स.
(९) कॅप्टन अभिजित अडसूळ, वि.स.स.
(१०) श्री. विजयराज शिंदे, वि.स.स.
(११) श्री. सुभाष चव्हाण, वि.प.स.
(१२) श्री. वसंतराव खोटरे, वि.प.स.
(१३) श्री. भगवानराव साळुंखे, वि.प.स.

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

श्री. यू. के. चव्हाण, अतिरिक्त सचिव.
श्री. जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

**नियोजन विभाग (रोहयो), मंत्रालय, मुंबई**

श्री. संतोष नवगिरे, कक्ष अधिकारी.

**रोहयो यंत्रण अधिकारी**

(१) श्री. अरूण डोंगरे, जिल्हाधिकारी, अमरावती.
(२) श्री. बावने, उप जिल्हाधिकारी (रोहयो).
(३) श्री. आनंद जगताप, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती.
(४) श्री. प्रकाश सांगळे, जिल्हा अधीक्षक, कृषी अधिकारी, अमरावती व इतर अधिकारी.

**अमरावती जिल्हा स्थानिक लोकप्रतिनिधी :**

(१) प्रा. विरेंद्र जगताप, वि.स.स.
(२) श्रीमती यशोमती ठाकूर, वि.स.स.
(३) श्री. रावसाहेब शेखावत, वि.स.स.
(४) श्री. केवलराम काळे, वि.स.स.
(५) श्रीमती सुरेखाताई ठाकरे, अध्यक्षा, जि. प., अमरावती.
(६) श्रीमती रजनी बेलसरे, सभापती, पं. स., चिखलदरा.
(७) श्रीमती मंगला रहाटे, सभापती, पं. स., दर्यापूर.

सदरहू बैठकीत समितीने जिल्ह्यात सुरू असलेल्या कामाबाबत चर्चा केली व त्यानंतर समितीने जिल्ह्यातील रोजगार हमी योजने अंतर्गत सुरू असलेल्या कामांना भेटी दिल्या.

**मंगळवार, दिनांक ११ जून २०१३**

समितीची बैठक जिल्हाधिकारी कार्यालय, अमरावती येथे घेण्यात आली आहे. सदरहू बैठकीस खालील सदस्य उपस्थित होते :—

**समिती प्रमुख :**

(१) ॲड. सदाशिवराव पाटील, वि.स.स.

**समिती सदस्य :**

(२) श्री. अनिल बावनकर, वि.स.स.
(३) श्री. वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.
(४) डॉ. खुशाल बोपचे, वि.स.स.
(५) श्री. हरिश पिंपळे, वि.स.स.
(६) प्रा. अतुल देशकर, वि.स.स.
(७) ॲड. आशिष जयस्वाल, वि.स.स.
(८) कॅप्टन अभिजित अडसूळ, वि.स.स.
(९) श्री. विजयराज शिंदे, वि.स.स.
(१०) श्री. सुभाष चव्हाण, वि.प.स.
(११) श्री. वसंतराव खोटरे, वि.प.स.
(१२) श्री. भगवानराव साळुंखे, वि.प.स.

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

श्री. यू. के. चव्हाण, अतिरिक्त सचिव,
श्री. जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

**नियोजन विभाग (रोहयो), मंत्रालय, मुंबई**

श्री. संतोष नवगिरे, कक्ष अधिकारी.

**विभागीय आयुक्त कार्यालय, अमरावती**

श्री. किशोर कामुने, उप आयुक्त (रोहयो), विभागीय आयुक्त कार्यालय.

**विभागीय अधिकारी**

(१) श्री. अरुण डोंगरे, जिल्हाधिकारी, अमरावती.
(२) श्री. बावने, उप जिल्हाधिकारी (रोहयो)
(३) श्री. आनंद जगताप, मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिल्हा परिषद, अमरावती.
(४) श्री. अरुण मोहोळ, उप मुख्य कार्यकारी अधिकारी (पंचायत).
(५) श्री. सदाशिव माने, अधीक्षक अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम मंडळ, अमरावती.
(६) श्री. दिलीप उकिर्डे, कार्यकारी अभियंता.
(७) श्री. सुनील भुतडा, कार्यकारी अभियंता, सार्वजनिक बांधकाम विभाग, अचलपूर.
(८) श्री. भरत खासबागे, कार्यकारी अभियंता (सा. बां.), विशेष प्रकल्प विभाग, अमरावती.
(९) श्री. प्रशांत पाटील, कार्यकारी अभियंता, सा. बां. विभाग, अमरावती.
(१०) श्री. पी. डी. हेडाऊ, कार्यकारी अभियंता (रोहयो), अमरावती.
(११) डॉ. दिलीप सिंह, उप महासंचालक, सामाजिक वनीकरण विभाग, अमरावती.
(१२) श्री. गंगाधर देपे, उप संचालक, सा. व. विभाग, अमरावती.
(१३) श्री. प्रकाश सांगळे, जिल्हा अधीक्षक, कृषी अधिकारी, अमरावती.

(१४) श्री. प. ना. भामरे, उप वन संरक्षक, पश्चिम मेळघाट, वन विभाग.

(१५) श्री. जितेंद्र रामगावकर, उप वन संरक्षक, पूर्व मेळघाट विभाग.

(१६) श्री. युवराज रास, उ.व.सं. सिपना.

(१७) श्री. के. डी. पेशने, उप वनसंरक्षक, परतवाडा.

(१८) श्री. नीनु सोमराज, उप वन संरक्षक, अमरावती.

(१९) श्री. उमेश उदल वर्मा, वन संरक्षक आकोट, वन्यजीव विभाग व इतर संबंधित अधिकारी उपस्थित होते.

या बैठकीत अमरावती जिल्ह्यात रोजगार हमी योजने अंतर्गत घेण्यात आलेल्या कामांतील अडचणी व उणिवा तसेच रोहयोच्या कामांना भेटी दिल्यानंतर आढळून आलेल्या त्रुटींबाबत जिल्हाधिकारी व ही योजना राबविणाऱ्या कार्यान्वयीन यंत्रणांचे अधिकारी यांच्याशी चर्चा केली व समितीने पाठविलेल्या प्रश्नावलीच्या अनुषंगाने समितीला पुरविण्यात आलेल्या माहितीच्या संदर्भात जिल्हाधिकारी व रोजगार हमी योजनेशी संबंधित कार्यान्वयीन यंत्रणेचे प्रमुख यांचेशी चर्चा केली.

## गुरुवार, दिनांक २ जानेवारी २०१४

गुरुवार, दिनांक २ जानेवारी, २०१४ रोजी दुपारी २-०० वाजता विधान भवन, मुंबई येथे समितीची बैठक घेण्यात आली. सदरहू बैठकीस खालील सदस्य उपस्थित होते :—

**समिती प्रमुख :**

(१) ॲड. सदाशिवराव पाटील, वि.स.स.

**समिती सदस्य :**

(२) श्री. वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.
(३) श्री. दिपक चव्हाण, वि.स.स.
(४) प्रा. लक्ष्मण ढोबळे, वि.स.स.
(५) श्री. हरिश पिंपळे, वि.स.स.
(६) श्री. कृष्णा खोपडे, वि.स.स.
(७) श्री. विजयराज शिंदे, वि.स.स.
(८) कॅप्टन अभिजित अडसूळ, वि.स.स.
(९) श्री. नितीन भोसले, वि.स.स.
(१०) श्री. सुभाष चव्हाण, वि.प.स.
(११) श्री. वसंतराव खोटरे, वि.प.स.
(१२) श्री. सुमंत गायकवाड, वि.प.स.
(१३) श्री. जयंत प्र. पाटील, वि.प.स. (निमंत्रित)

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

श्री. म. मु. काज, उप सचिव.
श्री. जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

**नियोजन विभाग (रोहयो)**

(१) श्री. व्ही. गिरीराज, प्रधान सचिव (रो. ह. यो.).
(२) श्री. व. कृ. पाटील, उप सचिव, (रो. ह. यो.).

**अमरावती जिल्ह्यातील अधिकारी**

(१) श्री. रा. र. महिवाल, जिल्हाधिकारी.
(२) श्री. आनंद जगताप, मुख्य कार्यकारी अधिकारी.
(३) श्री. अजय प्र. लहाने, उप आयुक्त, रोहयो.
(४) श्री. प्रशांत पी. पाटील, का.अ., सा.बां.वि., अमरावती.
(५) श्री. स. ना. लढ्ढा, का.अ., उर्ध्व वर्धा धरण, अमरावती.
(६) श्री. के. पी. कांबळे, का.अ., पा.प्र., अमरावती विभाग.
(७) श्री. व्ही. बी.भागवत, का.अ., जि.प.बां.विभाग, अमरावती.
(८) श्री. अनंत जोशी, सहा.वन संरक्षक, अमरावती.
(९) श्री. दिलीप उर्किडे, का.अ., वि.प्र., दर्यापूर.

(१०) श्री. एस. एस. मुरादे, का.अ., वि.प्र., सा.बां. अमरावती.

(११) श्री. आ. तु. देवगडे, का.अ., लघुसिंचन (जलसंधारण) विभाग, अमरावती.

(१२) श्री. जी. जे. क्षीरसागर, का.अ., लघुसिंचन, जि.प., अमरावती.

(१३) श्री. गंगाधर देपे, उप संचालक, सामाजिक वनीकरण.

या बैठकीत अमरावती जिल्ह्यातील रोहयोंच्या कामासंबंधात अमरावती जिल्हा बैठकीच्या वेळी देण्यात आलेल्या आश्वासनांबाबत व त्या संदर्भातील समितीच्या प्रश्नावलीनुसार नियोजन विभागाकडून प्राप्त झालेल्या माहितीच्या अनुषंगाने प्रधान सचिव, नियोजन विभाग (रोहयो) यांची साक्ष घेण्यात आली.

## बुधवार, दिनांक २१ मे २०१४

रोजगार हमी योजना समितीची बैठक बुधवार, दिनांक २१ मे २०१४ रोजी दुपारी २-०० वाजता विधान भवन, मुंबई येथे घेण्यात आली. सदरहू बैठकीस खालील सदस्य उपस्थित होते :—

**समिती प्रमुख :**

(१) ॲड. सदाशिवराव पाटील, वि.स.स.

**सदस्य :**

(२) श्री अनिल बावनकर, वि.स.स.

(३) श्री वामनराव कासावार, वि.स.स.

(४) श्री ओमप्रकाश पोकर्णा, वि.स.स.

(५) श्री दिलिपकुमार सानंदा, वि.स.स.

(६) श्री वसंतराव चव्हाण, वि.स.स.

(७) प्रा. लक्ष्मण ढोबळे, वि.स.स.

(८) श्री कृष्णा खोपडे, वि.स.स.

(९) श्री विजयराज शिंदे, वि.स.स.

(१०) श्री वसंतराव खोटरे, वि.प.स.

(११) श्री नरेंद्र आण्णा पाटील, वि.प.स.

**महाराष्ट्र विधानमंडळ सचिवालय :**

श्री. म. मु. काज, उप सचिव.

श्री. जनार्दन विचारे, अवर सचिव (समिती).

दिनांक २१ मे २०१४ रोजीच्या बैठकीत समितीने अमरावती जिल्ह्यासंदर्भातील अठ्ठाविसाव्या अहवालाच्या प्रारूपावर विचार करून आवश्यक त्या सुधारणांसह अहवाल संमत केला.

शासकीय मध्यवर्ती मुद्रणालय, मुंबई